शिक्षा का अधिकार

सर्व शिक्षा अभियान

सब पढ़ें सब बढ़ें

हिन्दी विषय की उपचारात्मक(रिमीडियल) शिक्षण पर आधारित

शिक्षक संदर्शिका

कक्षा 8

सत्र 2023—2024

राज्य हिन्दी संस्थान, उत्तर प्रदेश, वाराणसी

(राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उत्तर प्रदेश)

शिक्षा का अधिकार
सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

शिक्षक–संदर्शिका (हिन्दी)

(उपचारात्मक शिक्षण हेतु)

कक्षा–8

(वर्ष 2023–24)

राज्य हिन्दी संस्थान, उत्तर प्रदेश, वाराणसी
(राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उत्तर प्रदेश)

मुख्य संरक्षक : **श्री दीपक कुमार,** प्रमुख सचिव, बेसिक शिक्षा, उ०प्र० शासन।

संरक्षक : **श्री विजय किरन आनन्द**, महानिदेशक (स्कूल शिक्षा), उ०प्र० तथा राज्य परियोजना निदेशक, उ०प्र० सभी के लिए शिक्षा परियोजना परिषद्, लखनऊ।

निर्देशन : **डॉ० अंजना गोयल,** निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उ०प्र०, लखनऊ।

परामर्श : **डॉ० पवन कुमार,** संयुक्त निदेशक(एस.एस.ए.), राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उ०प्र०, लखनऊ, **श्रीमती दीपा तिवारी,** उप शिक्षा निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उ०प्र०, लखनऊ।

समन्वयन : **डॉ० ऋचा जोशी**, निदेशक राज्य हिन्दी संस्थान, उ०प्र०, वाराणसी।

समीक्षा : **डॉ० रामसुधार सिंह** (पूर्व विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, यू०पी० कालेज, वाराणसी), **प्रो० सत्यपाल शर्मा** (प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, बी०एच०यू०), **डॉ० उदय प्रकाश** (एसो०प्रो०, श्री बलदेव पी०जी० कालेज, बड़ागाँव, वाराणसी), **डॉ० सुनीता सिंह** (एसो०प्रो०, शिक्षा संकाय बी०एच०यू०), **डॉ० सत्य प्रकाश पाल** (असि० प्रो० हिन्दी विभाग, बी०एच०यू०)।

संपादन : **डॉ० प्रदीप जायसवाल**, शोध प्रवक्ता, राज्य हिन्दी संस्थान, उ०प्र०, वाराणसी, **श्री देवेन्द्र कुमार दूबे**, शोध प्रवक्ता, राज्य हिन्दी संस्थान, उ०प्र०, वाराणसी।

सहयोग : **डॉ० महेन्द्र द्विवेदी** (सलाहकार, यूनीसेफ, लखनऊ), **डॉ० शुभ्रांशु उपाध्याय** (सलाहकार, यूनीसेफ, लखनऊ)।

लेखक मंडल : **डॉ० शीला सिंह** (प्र०अ० रा०हा० बढ़ैनी कलाँ वाराणसी), **डॉ० सुषमा गुप्ता** (प्र०अ०, रा०हा० सिरसा, प्रयागराज), **डॉ० मनीष कुमार यादव** (प्रवक्ता, सी०टी०ई०, वाराणसी), **डॉ० चंदन शुक्ला** (प्रवक्ता, सी०टी०ई०, लखनऊ), **श्री दिनेश यादव** (प्रवक्ता, डायट, सोनभद्र), **डॉ० अर्पणा श्रीवास्तव** (प्रवक्ता रा०बा०इ०का० मलदहिया, वाराणसी), **डॉ० चंचल** (बा०इ०का० कोपागंज, मऊ), **श्री राम वचन यादव** (रा०इ०का०, चकिया, चंदौली), **श्रीमती नंदिता शर्मा** (स०अ०, रा०हा० धौरहरा, वाराणसी), **श्री सत्यजीत कुमार द्विवेदी** (प्र०अ०, उ०प्रा०वि०, प्रधान टोला, कुशीनगर), **श्री अखिलेश्वर प्रसाद गुप्ता** (एस०आर०जी०, वाराणसी), **श्री रंजन कुमार पाठक** (ए०आर०पी० बड़ागाँव, वाराणसी), **श्रीमती अनीता शुक्ला** (स०अ०, क०वि० रुस्तमपुर, वाराणसी), **श्रीमती शालिनी सिंह** (स०अ०, उ०प्र०वि० मंगारी, वाराणसी), **श्री प्रवीण कुमार द्विवेदी** (स०अ०, क०वि० धरतीडोलवा, सोनभद्र), **श्री मिथिलेश कुमार सिंह** (स०अ०, प्रा०वि० पचेवरा, मीरजापुर), **श्री शैलेश कुमार सिंह** (स०अ०, प्रा०वि० कैनाल बस्ती, मीरजापुर), **श्रीमती माया सिंह** (स०अ०, प्रा०वि० रसूलपुर रिठौरी, बुलंदशहर), **डॉ० नमिता सिंह** (स०अ०, प्रा०वि० चिरईगाँव, वाराणसी), **डॉ० प्रतिभा मिश्रा** (स०अ०, उ०प्रा०वि० पाली, भदोही), **श्री दुर्गेश नन्दन त्रिपाठी** (स०अ०, क०वि० कोइलीपुरवा, लखीमपुर खीरी), **श्रीमती अर्चना सिंह** (स०अ०, प्रा०वि० पतेरवाँ, वाराणसी), **श्रीमती रेखा वर्मा** (स०अ०, प्रा०वि० सेहमलपुर, वाराणसी), **श्रीमती नीलम सिंह** (स०अ०, क०वि० वारीगाँव, भदोही), **सुश्री अनुराधा कुमारी** (स०अ०, प्रा०वि० गोगहरा, चंदौली), **श्री अनुज प्रताप पाण्डेय** (स०अ०, प्रा०वि० हाजीपट्टी, मऊ), **डॉ० नीतिकेश यादव** (स०अ०, क०वि० चकवा, जौनपुर), **डॉ० सुमन पाण्डेय** (प्र०अ०, क०वि० सुन्दरपुर, वाराणसी), **श्रीमती निराशा सिंह** (स०अ०, पू०मा०वि० मवैया, मीरजापुर)।

तकनीकी सहयोग एवं रूपायन : **श्री विकास शर्मा** (स०अ०, उ०प्रा०वि० नगला सूरजभान कम्पोजिट, आगरा), **श्री वैभवकान्त श्रीवास्तव** (स०अ०, क०वि० सुल्तानपुर, आजमगढ़), **श्री अभिषेक कुमार** (उ०प्रा०वि० जखौली, सिद्धार्थनगर), **श्री अंकित श्रीवास्तव** (स०अ०, उ०प्रा०वि० चाहलवा, श्रावस्ती), **श्री अजीत कुमार कौशल** (क०स०रा०हि०सं०, उ०प्र०, वाराणसी)।

आवरण : **श्री रविकान्त श्रीवास्तव** (स०अ०–कला, रा०इ०कॉ०, प्रयागराज)।

आभार : **शिक्षक संदर्शिका के विकास में अनेक पुस्तकों का अवलोकन व पाठ्य–सामग्री, विभिन्न स्रोतों से लिए गए चित्रों आदि का उपयोग किया गया है। हम उनके प्रति आभारी हैं।**

निदेशक की कलम से

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का मुख्य उद्देश्य बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का अवसर देते हुए वैश्विक स्तर पर स्थापित करना है। शिक्षा का सार्वभौमीकरण करते हुए बच्चों का सर्वांगीण विकास करना एक महत्वपूर्ण पहलू है। शिक्षा बेहतर राष्ट्र की संकल्पना में अहम पक्ष है। समय के सापेक्ष प्रगति गुणवतापूर्ण शिक्षा पर ही निर्भर है। अतः यह हम सभी का दायित्व है कि त्रुटियों का आकलन कर उन्हें दूर करने का प्रयास किया जाए। इस दृष्टि से भाषा की बेहतर समझ तथा प्रयोग अनिवार्य है। बच्चों की भाषायी दक्षताओं का विकास उन्हें अन्य विषयों को भी समझने में सहायता देता है। कल्पना, अनुमान, तर्क, विचारों की स्पष्टता इस दिशा में बच्चों को सक्षम बनाती हैं।

विद्यालयी शिक्षा में बच्चों की रुचि भाषायी दक्षताओं में सहज ही होती है। वे सुनने बोलने, पढ़ने और लिखने की दक्षताओं में पारंगत होते हैं तथा उनकी समझ और भी बेहतर होती है। साथ ही व्याकरण और रचनात्मक कौशल उन्हें समस्या समाधान, तर्क, चिन्तन और विचार प्रकट करने में सहायक होती हैं।

बच्चों को केन्द्र में रखकर उनके अधिगम, आकलन और संप्राप्ति पर कार्य किया जाना अत्यन्त सुखद है। शिक्षकों के लिए 50 कार्यदिवसों की शिक्षण योजना बच्चों के उपचारात्मक (रिमीडियल) कक्षा शिक्षण की दिशा में नवीन और सार्थक कदम है। इन योजनाओं पर आधारित कार्यपत्रक बनाए गए हैं, जिनकी संख्या प्रतियोजना 2 से 5 कार्यपत्रक हैं जिन्हें कार्यपुस्तिका के रूप निबद्ध किया गया है। कार्यपुस्तिका बच्चों के लिए है जो दो भागों में है– पहले भाग में उपचारात्मक शिक्षण पर आधारित कार्यपत्रक और दूसरे भाग में पाठ आधारित कार्यपत्रक हैं। प्रश्नों की प्रकृति सरल है और बच्चों की अभिरुचि को ध्यान में रखकर बनाई गई है। कार्यपत्रकों में रंगीन एवं आकर्षक चित्र बने हुए हैं जो सहज रूप से बच्चों के लिए प्रश्नों को हल करने में आनन्ददायक वातावरण बनाने में सक्षम है।

इस संदर्शिका एवं कार्यपुस्तिका के विकास से जुड़े विभिन्न जनपदों के जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान के प्रवक्ताओं, बाह्य विशेषज्ञों एवं शिक्षकों की सराहना करती हूँ , जिन्होंने अपने सतत् एवं अथक परिश्रम से इस संदर्शिका के विकास में सहयोग प्रदान किया है। साथ ही इस संदर्शिका एवं कार्यपुस्तिका के निर्देशन, समन्वय एवं सम्पादन हेतु राज्य हिन्दी संस्थान उ०प्र०, वाराणसी के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ। इस संदर्शिका एवं कार्यपुस्तिका में विभिन्न स्त्रोतों से सामग्री ली गयी है, उन सभी के प्रति भी मैं अभार व्यक्त करती हूँ। इस संदर्शिका एवं कार्यपुस्तिका को और अधिक उपयोगी बनाने के संबंध में आपके सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

(डा० अंजना गोयल)
निदेशक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद
उ०प्र०, लखनऊ

भूमिका

वर्तमान परिदृश्य की चुनौतियों के सापेक्ष राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत शिक्षा व्यवस्था में कई बदलाव किए गए हैं। परिस्थितिजन्य कारणों से बच्चों में आए लर्निंग गैप (अधिगम अंतराल) को कम करके अपेक्षित दक्षताओं को प्राप्त करने हेतु अवसर प्रदान करने के साथ ही कक्षा अनुरूप निर्धारित अधिगम संप्राप्ति सुनिश्चित कराना एक बड़ी चुनौती है।

इस क्रम में शिक्षकों और बच्चों के लिए शिक्षण सामग्री उपलब्ध कराना आवश्यक है। इससे बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए सकारात्मक वातावरण सृजन किए जाने में सहायता मिलती है। बच्चे विद्यालय की सीखने सिखाने की प्रक्रियाओं में आत्मविश्वास के साथ भाग लेंगे तथा कक्षावार निर्धारित अधिगम संप्राप्ति को सरलतापूर्वक प्राप्त कर लेंगे।

इस परिप्रेक्ष्य में उच्च प्राथमिक कक्षाओं (कक्षा 6 से 8) के शिक्षकों के लिए शिक्षक संदर्शिकाओं एवं बच्चों के लिए कार्यपुस्तिकाओं का विकास किया गया है।

बच्चों को केन्द्र में रखकर तैयार की गई शिक्षक संदर्शिकाएँ शिक्षकों को हिन्दी भाषा की नई शिक्षण विधियों और गतिविधियों आदि से परिचित कराएँगी। कार्यपुस्तिकाओं को दो भागों में बाँटा गया है– पहले भाग में बच्चों के उपचारात्मक शिक्षण हेतु 50 दिवसीय शिक्षण योजना आधारित कार्यपत्रक हैं तथा दूसरे भाग में पाठ आधारित कार्यपत्रक हैं। ये कार्यपुस्तिकाएँ अभिभावकों की सहभागिता भी सुनिश्चित करेंगी साथ ही वे बच्चों की शैक्षिक प्रगति पर शिक्षकों से संवाद भी कर सकेंगे।

शिक्षकों के लिए

आप सभी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 से परिचित हैं। शिक्षा व्यवस्था में कई महत्वपूर्ण बदलाव हो रहे हैं। कोविड के कारण बच्चों में आये लर्निंग गैप को न्यूनतम करने के प्रयास किये जा रहे हैं। इसी क्रम में शिक्षकों के लिए नई–नई शिक्षण सामग्रियों का निर्माण किया जा रहा है, जिससे कक्षा अनुरूप बच्चों के न्यूनतम अधिगम स्तर को प्राप्त करने में सहायता मिल सके। आप से अपेक्षा है कि सन्दर्शिका की मदद से शिक्षण के दौरान विषयवस्तु के अनुसार आडियो/विडियो/अन्य शिक्षण अधिगम सामग्री का चयन एवं उपयोग उपलब्धता के अनुसार कर लें। इस आशय के साथ यह हस्तपुस्तिका आपके भाषा शिक्षण में सहयोग करने हेतु उपलब्ध करायी जा रही है। एक शिक्षक के रूप में आपसे यह अपेक्षा है कि......

- कक्षा में उन बच्चों की पहचान करें जिनका न्यूनतम अधिगम स्तर कक्षा के अनुरूप नहीं है, जिससे कक्षा में उनकी अधिक मदद हो सके।
- हस्तपुस्तिका में जो शिक्षण–योजना दी गई है, कक्षा–शिक्षण में उसी विधि का प्रयोग करें।
- यथास्थान/ यथासमय कार्यपत्रकों का प्रयोग करें।
- बच्चे जब कार्यपुस्तिका पर कार्य करें तब उनका अवलोकन अवश्य करें।
- कार्यपत्रकों की जाँच कर आवश्यक फीडबैक बच्चों को दें।
- बच्चों से बातचीत करें कि उन्हें विषयवस्तु को समझने में क्या और कहाँ परेशानी हो रही है।

50 दिवसीय उपचारात्मक शिक्षण योजना

दिवस	सप्ताह	अपेक्षित अधिगम संप्राप्ति/दक्षताएँ	पृष्ठ संख्या
1	1	चित्र के आधार पर कहानी का निर्माण करते हैं।	11
2	1	बच्चे सांकेतिक चित्रों को देखकर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं।	13
3	1	बच्चे कठिन शब्दों का सही उच्चारण करते हुए लेखन कार्य करते हैं।	16
4	1	बच्चे अपठित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों का उत्तर देते हैं तथा उनका शीर्षक बनाते हैं।	18
5	1	बच्चे समझ के साथ पढ़कर उत्तर देते हैं।	20
6	2	बच्चे अनुच्छेद पढ़कर प्रश्नों के उत्तर समझ के साथ देते हैं।	22
7	2	पठित गद्यांश के आधार पर प्रश्नों का उत्तर देते हैं।	24
8	2	बच्चे कविता को धाराप्रवाह पढ़ते हैं और उसका अर्थ समझकर उत्तर देते हैं।	26
9	2	बच्चे समझ के साथ पढ़ते हैं और प्रश्नों के उत्तर देते हैं।	28
10	2	बच्चे स्थानीय घटनाओं/चित्रों/दृश्यों को देखने के बाद अपने अनुभव मौखिक एवं लिखित भाषा में व्यक्त करते हैं।	31
11	3	बच्चे किसी पाठ्यवस्तु/समाचार–पत्र/पत्रिका के शीर्षक/कहानी/ इंटरनेट पर प्रकाशित सामग्री को समझते हैं, साथ ही सही उच्चारण करते हुए पढ़ते हैं।	33
12	3	छात्र गद्य को पढ़कर उसमें निहित भावों को समझते हुए प्रश्नों के उत्तर देने में सफल होते हैं।	35

13	3	बच्चे कहानी को आगे बढ़ाकर उसका अंत बदल कर लिखते हैं।	37
14	3	बच्चे संज्ञा शब्द एवं उसके प्रकार की पहचान करते हैं और उसकी परिभाषा भी बताते/लिखते हैं।	39
15	3	बच्चे सर्वनाम एवं उसके भेद की अवधारणा को समझते हैं तथा उनका उचित प्रयोग करते हैं।	43
16	4	बच्चे विशेषण शब्दों और उसके भेदों की पहचान करते हैं।	47
17	4	बच्चे क्रिया और उसके भेदों की पहचान करते हैं।	51
18	4	बच्चे पढ़े गए पद्याशों का भावार्थ अपने शब्दों में लिखते हैं।	54
19	4	बच्चे पद्य को पढ़कर लेखन द्वारा रचना में निहित भाव/विचार को अपने अनुभवों के साथ स्पष्ट कर लेते हैं।	56
20	4	बच्चे प्राकृतिक और समसामयिक घटनाओं की जानकारी रखते हैं एवं उन पर क्रियात्मक लेखन करते हैं।	59
21	5	बच्चे सहायक क्रिया एवं मुख्य क्रिया को अलग–अलग जानते एवं समझते हैं, बच्चे सहायक क्रिया एवं मुख्य क्रिया के प्रयोग से वाक्य रचना करते हैं।	61
22	5	बच्चे समानार्थी/पर्यायवाची, शब्दों को बताते हैं और चर्चा करते हैं। वे विपरीतार्थी, अनेकार्थी शब्दों के अर्थ जानते हुए उसका प्रयोग करते हैं।	64
23	5	बच्चे वचन एव लिंग की पहचान कर उनमें अंतर करते हैं।	67
24	5	बच्चे विराम–चिह्न की पहचान करते हैं तथा इसका लेखन में प्रयोग करते हैं।	69

25	5	बच्चे दिए गए शीर्षक पर निबंध लिखते हैं।	71
26	6	बच्चे उपसर्ग और प्रत्यय की समझ रखते हैं। उपसर्ग और प्रत्यय लगाकर नये शब्दों का निर्माण करते हैं।	73
27	6	विशिष्ट शब्दों, मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग लेखन में करते हैं।	76
28	6	बच्चे विविध कलाओं यथा हस्तकला, वास्तुकला, नृत्यकला, खेती–बारी आदि में प्रयोग होने वाली भाषा के बारे में जिज्ञासा व्यक्त करते हैं और उनके विषय में बताते हैं।	78
29	6	बच्चे दी गई कहानी को पढ़ते हुए उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर देते हैं।	80
30	6	बच्चे स्तरानुकूल कविता को अपने शब्दों में लिखते हैं।	83
31	7	बच्चे हिन्दी शब्दकोश में शब्दो के अर्थ खोज लेते हैं।	85
32	7	बच्चे यात्रा संबंधी जानकारी प्राप्त करते हैं और विभिन्न प्रकार के टिकट की पहचान करके टिकटों पर लिखी जानकारी से अवगत हो जाते हैं।	88
33	7	बच्चे यात्रा के वृतान्त को प्रस्तुत करते हैं।	90
34	7	उपयुक्त शब्द, मुहावरा/लोकोक्ति का प्रयोग कर कहानी लिखते हैं।	92
35	7	बच्चे औपचारिक पत्र–लेखन करते हैं।	94
36	8	दिए गए विषय के आधार पर अनौपचारिक पत्र का लेखन करते हैं। बच्चे अनौपचारिक पत्र लेखन में समर्थ होते हैं।	96

37	8	बच्चे संवादात्मक वाक्यों के माध्यम से अभिनय करने में समर्थ होते हैं।	98
38	8	विभिन्न प्रकार की श्रव्य–दृश्य सामग्री तथा संचार माध्यमों द्वारा सुनी या देखी गई विषय–वस्तु का वर्णन अपने शब्दों में करते हैं ।	100
39	8	बच्चे शब्द–युग्म की अवधारणा से परिचित हैं। वे इनका अर्थ जानते हुए भाषायी खेल एवं वाक्य–रचना में इनका प्रयोग करते हैं।	102
40	8	बच्चे तद्भव–तत्सम शब्दों को जानते हैं तथा उनका प्रयोग करते हैं। बच्चे तद्भव एवं तत्सम शब्दों के अर्थ एक दूसरे से पूछते हैं।	105
41	9	बच्चे समास के अर्थ और भेद को जानते हैं। वे उनका प्रयोग अपनी बातचीत में करते हैं।	107
42	9	बच्चे शब्दों के माध्यम से वाक्य–निर्माण व वाक्यों के प्रकार तथा उनके अन्तर को समझते हैं।	111
43	9	पठित सामग्री पर बेहतर समझ हेतु शब्दकोश या अन्य पुस्तकों से शब्द के अर्थ खोजते हैं और बताते हैं।	113
44	9	बच्चे विशिष्ट शब्दों मुहावरों, लोकोक्तियों का प्रयोग लेखन एवं बोलचाल की भाषा में करते हैं।	115
45	9	बच्चे समाचार लेखन में समर्थ होते हैं।	117
46	10	बच्चे इंटरनेट से विविध विषयों की जानकारी प्राप्त करते हैं।	119

47	10	बच्चे इंटरनेट पर प्रकाशित सामग्री को पढ़ कर उसकी उपयोगिता के बारे में बताते हैं।	121
48	10	विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं को पढ़कर विषय–वस्तु पर विचार व्यक्त करते हुए अपने विद्यालय के लिए बाल पत्रिका का निर्माण करते हैं।	123
49	10	बच्चे कल्पना आधारित लेखन कार्य करते हैं।	125
50	10	बच्चे परियोजना (प्रोजेक्ट) कार्यों का प्रस्तुतीकरण करते हैं।	127

सप्ताह– 1

दिवस–01

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– चित्र के आधार पर कहानी का निर्माण करते हैं।

सहायक सामग्री– कहानी से संबंधित चित्र।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक बच्चों को जंगल, शेर, चूहा, शिकारी, खरगोश, कछुआ आदि के चित्र दिखाते हुए बताएँगे कि इनमें से कई चित्र एक–दूसरे से संबंधित हैं। आपको इन चित्रों को ध्यानपूर्वक देखना है और समझना है कि इन चित्रों में क्या दिखाया जा रहा है। इन चित्रों के आधार पर आपको एक कहानी बनानी है।

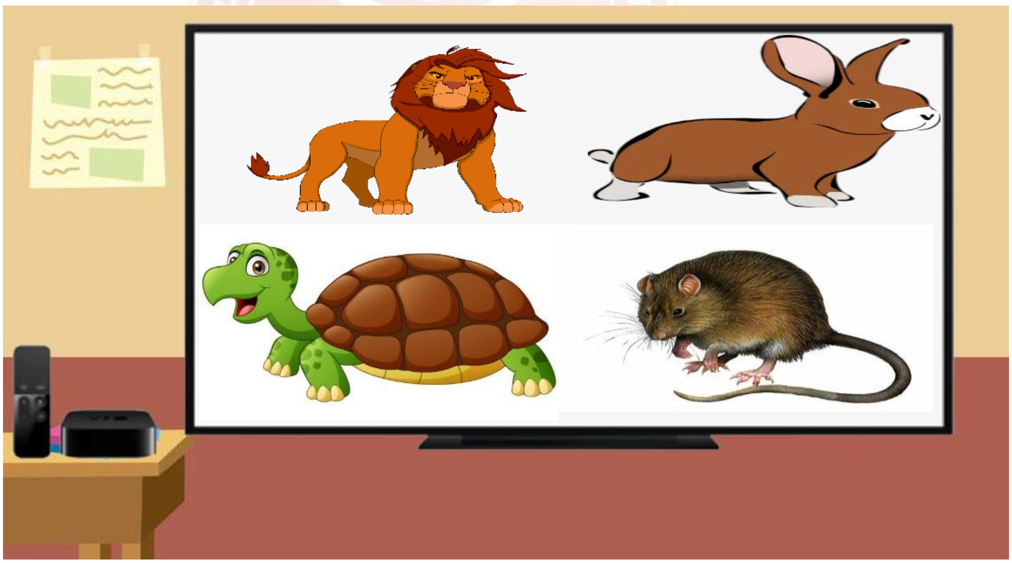

शिक्षण के मध्य

शिक्षक बच्चों को चित्र दिखाते हुए चित्र से संबंधित कहानी के कुछ संकेत भी बच्चों से साझा करेंगे। चित्र को दिखाने के बाद शिक्षक बच्चों से कुछ प्रश्न करेंगे–

शिक्षक– विभिन्न चित्रों में आपको क्या–क्या दिखाई दे रहा है?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)

शिक्षक– चित्र में दिखाई दे रहे जानवर मित्र हैं या शत्रु?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)

शिक्षक– शिकारी किसका शिकार करेगा?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)

(चित्र में बच्चों की रुचि जागृत हो जाने के बाद शिक्षक बच्चों को समूह में विभक्त कर देंगे और प्रत्येक समूह को चित्र के आधार पर अपने समूह में चर्चा कर कहानी बनाने का निर्देश देंगे।)

प्रत्येक समूह आपस में चर्चा कर एक कहानी बनाएगा और उसका हाव–भाव के साथ कक्षा में प्रस्तुतीकरण करेगा। इस प्रस्तुतीकरण के दौरान शिक्षक बच्चों को प्रोत्साहित भी करते रहेंगे। प्रत्येक समूह के साथ यही प्रक्रिया दुहराई जाएगी। कहानी बताने के क्रम में यदि किसी समूह द्वारा कुछ विशेष शब्दों का प्रयोग किया गया हो तो शिक्षक उसे श्यामपट्ट पर लिखते जाएँगे और सभी समूह की प्रस्तुति हो जाने के बाद उन शब्दों पर चर्चा करेंगे।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक संख्या एक और दो में दिए गए चित्रों के आधार पर एक कहानी बनाकर कक्षा में बारी–बारी से सुनाने के लिए कहेंगे। शिक्षक इस कार्य में बच्चों की सहायता करेंगे और बच्चों को प्रोत्साहित करेंगे।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को निर्देशित करेंगे कि कार्यपत्रक संख्या तीन में दिए गए चित्रों के आधार पर एक कहानी, घर से विचार करके आएँगे और उसे कक्षा में सुनाएँगे।

सप्ताह– 1

दिवस–02

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे सांकेतिक चित्रों को देखकर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं।

सहायक सामग्री– यातायात चिह्नों के चित्र व यातायात नियंत्रण का वीडियो क्लिप।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक सर्वप्रथम बच्चों को यातायात चिह्नों के कुछ चित्र दिखाकर उनसे प्रश्न करेंगे।

शिक्षक– इस चित्र में आपको क्या–क्या दिखाई दे रहा है?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)

शिक्षण के मध्य

शिक्षक यातायात नियमों से जुड़े एक–एक चित्र बच्चों को दिखाते जाएँगे और उन पर चर्चा करते जाएँगे।

गतिविधि–

कक्षा को चार समूह में विभक्त कर दिया जाएगा और प्रत्येक को यातायात नियमों के दो–दो चिह्नों का चित्र दिया जाएगा। प्रत्येक समूह को चिह्नों के बारे में आपस में चर्चा करने को कहा जाएगा कि यह चित्र यातायात के किस नियम से संबंधित है। प्रत्येक समूह आपस में चर्चा करेगा और समूह का एक सदस्य उस चिह्न पर अपने समूह के विचार कक्षा में बताएगा।

शिक्षक समूह द्वारा प्राप्त विचारों पर चर्चा करते हुए यातायात के नियमों के विषय में अपनी बात रखेंगे कि, "बच्चों सड़क के किनारे बोर्ड पर लगी सूचनाओं को आपने देखा एवं पढ़ा होगा, जैसे– कृपया धीरे चलें, दुर्घटना से देर भली आदि और कई

स्थानों पर आपने चौकोर, तिकोन एवं वृत्ताकार बोर्ड भी देखे होंगे, उन पर कुछ संकेत बने होते हैं। ये संकेत हमें सुरक्षित यात्रा के लिए संकेतक का कार्य करते हैं। आए दिन हमें किसी न किसी दुर्घटना के बारे में समाचार सुनने और पढ़ने को मिलता है।"

शिक्षक– बच्चो, दुर्घटनाएँ क्यों होती हैं?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)

शिक्षक यातायात नियमों से जुड़े एक–एक चित्र बच्चों को दिखाते जाएँगे और उनका अर्थ भी बताते जाएँगे–

	नो–एन्ट्री संकेत– यह चिह्न उन स्थानों पर लगाया जाता है जहाँ सभी वाहनों का प्रवेश निषिद्ध हो।
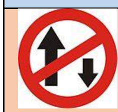	**वन–वे संकेत–** यह संकेत दर्शाता है कि आप कोई भी वाहन केवल एक ही दिशा में चला सकते हैं, बीच में मुड़ नहीं सकते हैं।
	नो पार्किंग– यह संकेत यह दर्शाता है कि इस क्षेत्र में कोई भी वाहन खड़ा करना वर्जित है।
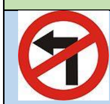	यह संकेत यह दर्शाता है कि किसी भी वाहन को बाएँ ओर नहीं मुड़ना है।
	यह संकेत यह दर्शाता है कि किसी भी वाहन को दाएँ ओर नहीं मुड़ना है।
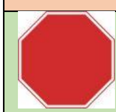	**स्टॉप संकेत–** इस संकेत का अर्थ है कि आप रुकें, देखें व जब सुरक्षित हों तब आगे बढ़ें।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक निम्नलिखित कविता का समूह में पाठ करेंगे।

बच्चों, सड़क पार जब करना,
इतनी बात ध्यान में रखना,
पहले अपने दाएँ देखो,
फिर तुम अपने बाएँ देखो।
फिर से देखों दाएँ–बाएँ
अगर जो मोटर गाड़ी आए,
हार्न – घण्टी पड़े सुनाई
तभी जरा रुक जाना भाई।
जब यह सड़क साफ दिख जाए
मोटर गाड़ी नजर न आए
सड़क सम्भलकर करना पार
कहलाओगे तुम होशियार ।

बच्चों को समूह में कविता सुनाने के कहा जाएगा। शिक्षक द्वारा यातायात के नियमों से संबंधित चिह्नों की पहचान कर उसके उपयोग और दुर्घटना से बचने के विषय में बताया जाएगा ।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक में दिए गए निर्देशों के अनुसार घर से पूरा करके लाने को कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 1

दिवस–03

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे कठिन शब्दों का सही उच्चारण करते हुए लेखन कार्य करते हैं।

सहायक सामग्री– शब्द चार्ट, वीडियो इत्यादि।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक बच्चों को दिए गए वीडियो या शब्द चार्ट दिखाएँगे जिसमें सभी मात्राओं से बने शब्द होंगे। शब्द ऐसे हो सकते हैं–

महापुण्य, बोधिसत्त्व, अन्तर्राष्ट्रीय, सम्भावना, व्याख्याकार, तत्कालीन, कुरीतियाँ, मीमांसा

शिक्षण के मध्य

शिक्षक शिक्षण के दौरान दी गई कविता का वाचन कराएँगे।

कलम, आज उनकी जय बोल,
जला अस्थियाँ बारी–बारी
छिटकायी जिसने चिनगारी,
जो चढ़ गए पुण्य–वेदी पर
लिये बिना, गरदन का मोल
कलम, आज उनकी जय बोल।
जो अगणित लघु दीप हमारे
तूफानों में एक किनारे,
जल कर बुझ गए,
किसी दिन माँगा नहीं स्नेह मुँह खोल।
कलम, आज उनकी जय बोल।

पी कर जिनकी लाल शिखाएँ
उगल रहीं लू– लपट दिशाएँ
जिनके सिंहनाद से सहमी
धरती रही अभी तक डोल
कलम, आज उनकी जय बोल।

शिक्षक कविता में आए कठिन शब्दों को श्यामपट्ट पर लिखेंगे और बच्चों से पढ़ने को कहेंगे।

अस्थियाँ, पुण्य–वेदी, अगणित, स्नेह, शिखाएँ, सिंहनाद, छिटकायी

शिक्षक इन शब्दों को श्यामपट्ट पर लिखेंगे और बच्चों से इन शब्दों का बार–बार शुद्ध उच्चारण कराएँगे। इनके उच्चारण से बच्चों में उच्चारण संबंधी दोष दूर हो जाएँगे। शिक्षक दिए गए कार्यपत्रकों पर कार्य कराएँगे।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक बच्चों द्वारा पूर्ण किए गए कार्यपत्रकों की जॉच करेंगे और पुनः दिए गए शब्दों को लिखकर उनका अर्थ लिखने को कहेंगे, जिससे बच्चों में आ रही उच्चारण संबंधी कमियों को दूर किया जा सके।

शिक्षक दिए गए कठिन शब्दों की पुनरावृत्ति करते हुए काठिन्य निवारण करेंगे। बच्चों से इन शब्दों का अभ्यास करवाएँगे।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को गृहकार्य के लिए दिए गए शब्दों का वर्ण–विच्छेद करने को कहेंगे तथा बच्चे उनका उच्चारण करके लिखेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 1

दिवस–04

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे अपठित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों का उत्तर देते हैं तथा उनका शीर्षक बनाते हैं।

सहायक सामग्री– प्रदूषण से संबंधित चित्र, वनों या नदियों के चित्र, प्रदूषण से संबंधित आँकड़े आदि।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

सर्वप्रथम शिक्षक बच्चों से वनों के महत्त्व पर बातचीत करेंगे। प्रदूषण या गंदगी पर बच्चों से उनके पूर्वज्ञान पर आधारित प्रश्न भी पूछ सकते हैं, जैसे–

शिक्षक– बच्चो, आपके घर में कौन–कौन से वृक्ष हैं?

बच्चे– (संभावित उत्तर)

शिक्षक– वृक्ष हमारे लिये किस प्रकार उपयोगी हैं?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)

शिक्षक– आपके घर में नीम का पेड़ तो होगा, क्या आप बता सकते हैं कि नीम के पौधे का औषधीय महत्व क्या है?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)

शिक्षण के मध्य

शिक्षक बच्चों से एक अपठित गद्यांश पढ़वाएँगे–

वन और पर्यावरण का बहुत गहरा संबंध है। प्रकृति के संतुलन को बनाये रखने के लिये पृथ्वी के तीन3 प्रतिशत भाग को अवश्य हरा–भरा होना चाहिए। वन जीवनदायक है, ये वर्षा कराने में सहायक होते हैं। धरती की उपजाऊ शक्ति को बढ़ाते हैं। वनों से भूमि का कटाव रोका जा सकता है। वनों से रेगिस्तान का फैलाव रुकता

है, सूखा कम पड़ता है, इससे ध्वनि प्रदूषण की भयंकर समस्या पर भी काफी हद तक नियंत्रण—पाया जा सकता है । वन ही नदियों, झरनों और अन्य प्राकृतिक जल स्रोतों के भण्डार हैं, वनों से हमें लकड़ी, फल, फूल, खाद्य पदार्थ, गोंद तथा अन्य सामान प्राप्त होते हैं, आज भारत में दुर्भाग्य से केवल 23 प्रतिशत वन ही बचे हैं, जैसे—जैसे उद्योगों की संख्या बढ़ती जा रही है वैसे—वैसे वनों की आवश्यकता और बढ़ती जा रही है। वन संरक्षण एक कठिन एवं महत्वपूर्ण कार्य है। इसमें हर व्यक्ति को अपनी जिम्मेदारी समझनी पड़ेगी और अपना योगदान देना होगा। अपने घर, मोहल्ले, नगर में अत्यधिक संख्या में वृक्षारोपण कराकर इसको एक आंदोलन के रूप में आगे बढ़ाना होगा।

अनुच्छेद आधारित प्रश्न इस प्रकार हो सकते हैं, जैसे—

प्रश्न— प्रकृति के संतुलन को बनाये रखने के लिये वन कैसे उपयोगी है?
प्रश्न— वृक्षों से हमें किस प्रकार के उत्पाद मिलते हैं?
प्रश्न— भारत में कितने प्रतिशत वन शेष हैं?
प्रश्न— वन संरक्षण के लिये प्रत्येक व्यक्ति को क्या करना होगा?

शिक्षक के दिए गए उत्तरों को ध्यानपूर्वक सुनेंगे तथा उनकी गलतियों को सुधारेंगे। कार्यपत्रक संख्या एक को दिए गए निर्देशों के अनुसार पूर्ण करने को कहेंगे तथा अपेक्षित सहयोग भी करेंगे।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक बच्चों के पूर्ण किए गए कार्यपत्रकों की जाँच करेंगे तथा उसमें आने वाली कठिनाईयों को दूर करने के लिये बच्चों का सहयोग करेंगे। पुनरावृत्ति करेंगे तथा समझ को बेहतर बनाने के लिये बच्चों के साथ मिलकर कार्य करेंगे। कार्यपत्रक संख्या दो को दिए गए निर्देशों के अनुसार पूर्ण करने को कहेंगे।

प्रदत्त कार्य— शिक्षक बच्चों से कार्यपत्रक संख्या तीन को दिए गए निर्देशों के अनुसार घर से लिखकर लाने को कहेंगे।

सप्ताह– 1

दिवस–05

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे समझ के साथ पढ़कर उत्तर देते हैं।

सहायक सामग्री– कविता/कहानी से संबंधित अनुच्छेद ।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

बच्चों से बातचीत कर संस्कृति की अवधारणा से परिचित कराने का प्रयास करेंगे। बच्चों से कुछ प्रश्न करेंगे, जैसे–

शिक्षक– आपके घर में कौन–कौन से त्योहार मनाए जाते हैं ?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)

शिक्षक– कौन–सी भाषा बोली जाती है ?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)

शिक्षक– किस प्रकार के कपड़े पहने जाते हैं ?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)

आदि प्रश्न पूछकर उन्हें संस्कृति की अवधारणा समझाएँगे।

शिक्षण के मध्य

(अनुच्छेद का शिक्षक द्वारा आदर्श वाचन किया जाएगा, तत्पश्चात् बच्चों से अनुकरण वाचन करने को कहा जाएगा। बच्चों द्वारा अनुकरण वाचन करने के बाद उसका मौन वाचन भी किया जाएगा।)

भारतीय संस्कृति का मूल वैदिक संस्कृति है। यह संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है। भारतीय संस्कृति पर अनेक धर्म, जाति, सम्प्रदाय, मत और आचारों–विचारों का प्रभाव पड़ता गया। भारतीय संस्कृति में समाज के

सभी पहलुओं पर विचार किया गया तथा व्यक्ति, परिवार, समाज से लेकर राष्ट्रीय उद्भव तक के विभिन्न मार्ग दिखाए गए । हमारी संस्कृति अपनी उदारता सहिष्णुता के कारण आज भी विश्व को आकर्षित करती है। यहाँ विचारों की स्वतंत्रता है। समन्वय की भावना भारतीय संस्कृति की विशेषता है। भारतीय संस्कृति आशावाद, धार्मिकता तथा अहिंसा की सबसे बड़ी समर्थक है।

शिक्षक– भारतीय संस्कृति का मूल क्या है?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)

शिक्षक– भारतीय संस्कृति किस कारण से विश्व को आकर्षित करती है?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)

शिक्षक– भारतीय संस्कृति की मुख्य विशेषता क्या है?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)

शिक्षण के अंत में

शिक्षक बच्चों से चर्चा करने के बाद एक बार पुनः अनुच्छेद का वाचन करेंगे और बच्चों से उनके रहन–सहन, खान–पान, परिधान, तीज–त्योहार आदि पर बातचीत कर संस्कृति की अवधारणा को पुष्ट करेंगे। शिक्षक बच्चों से कार्यपत्रक को दिए गए निर्देशों के अनुसार पूर्ण करने के लिए कहेंगे । इस कार्य में आ रही कठिनाईयों को शिक्षक द्वारा दूर किया जायेगा।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक में दिऐ गए निर्देशों के अनुसार घर से लिखकर लाने के लिए कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।

सप्ताह– 2

दिवस–06

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे अनुच्छेद पढ़कर प्रश्नों के उत्तर समझ के साथ दे पाने में समर्थ हो जाते हैं।

सहायक सामग्री– कार्यपत्रक।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक श्यामपट्ट पर एक अनुच्छेद लिखेंगे और बच्चों को समझाते हुए पढ़ने का निर्देश देंगे –

लालबहादुर शास्त्री का जन्म उत्तर प्रदेश के रामनगर के एक साधारण–परिवार में 2 अक्टूबर सन् 1904 ई० को हुआ था। इनके पिता शारदा प्रसाद एक स्कूल में अध्यापक थे। शास्त्री जी की माँ सरल स्वभाव की महिला थीं। उनमें सच्चाई, स्वाभिमान तथा देशभक्ति की भावना कूट–कूट कर भरी थी।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक परस्पर संवाद के माध्यम से बच्चों से अनुच्छेद के सन्दर्भ में बात करेंगे और अनुच्छेद से जुड़े प्रश्नों को करेंगे–

शिक्षक– लालबहादुर शास्त्री का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

बच्चे– लालबहादुर शास्त्री का जन्म 2 अक्टूबर सन् 1904 में वाराणसी जनपद के रामनगर नामक स्थान में हुआ था।

शिक्षक– इनके पिताजी का क्या नाम था ?

बच्चे– इनके पिता जी का नाम श्री शारदा प्रसाद था।

शिक्षक– सच्चाई, स्वाभिमान और देशभक्ति की भावना किसमें भरी थी।

बच्चे– लालबहादुर शास्त्री जी में ।

शिक्षक बच्चों से प्रश्न हल करवाएँगे। शिक्षक गद्यांश की अवधारणा को स्पष्ट करेंगे और साथ ही बताएँगे कि प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में हों। गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर ही उससे सम्बंधित प्रश्नों का उत्तर देना चाहिए।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक एक बार पुनः गद्यांश की समझ विकसित करने और उससे जुड़े प्रश्नों को हल कर पाने की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए सत्र को समेटने का प्रयास करेंगे।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक में दिऐ गए निर्देशों के अनुसार घर से लिखकर लाने के लिए कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 2

दिवस–07

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– पठित गद्यांश के आधार पर प्रश्नों का उत्तर देते हैं।

सहायक सामग्री– महात्मा बुद्ध का चित्र, कार्यपत्रक आदि विषय संबंधित सामग्री।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक शिक्षण की शुरूआत बच्चों से सामान्य बातचीत करके करेंगे–

शिक्षक– बच्चो! मनोरंजन के विभिन्न साधनों (टीवी, मोबाइल, पत्र–पत्रिकाएँ, खेल आदि) में आपको क्या अच्छा लगता है?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)

शिक्षक– आपने अपनी पुस्तक की कहानियाँ पढ़ी होंगी, क्या आप बिना रुके पढ़ते हैं?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)

शिक्षक– पुस्तक में कहानी को कितने भागों में विभक्त किया गया है?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)

शिक्षक– कहानी को कई भागों में विभक्त करते हैं, उसे क्या कहते हैं?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)

शिक्षक– किसी अनुच्छेद को पढ़ कर उसका उत्तर किस प्रकार से देते हैं?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)

शिक्षण के मध्य

शिक्षक बच्चों के समक्ष कोई भी छह से आठ पंक्तियों की एक समसामयिक घटना के विषय को प्रस्तुत करेंगे। इस घटना के बारे में शिक्षक बताएँगे कि ऐसा क्यों हुआ और इसके होने से क्या–क्या परिवर्तन हुआ। उसके पश्चात् वह बच्चों से उस घटना

से संबंधित प्रश्न पूछेंगे। शिक्षक बच्चों को बताएँगे कि इन प्रश्नों के उत्तर वर्णनात्मक होने चाहिए।

कार्यपत्रक संख्या एक को बच्चों को पढ़ने के लिए कहा जाएगा। जब बच्चे उस कार्यपत्रक को पढ़ लेंगे तब उस कार्यपत्रक में शामिल प्रश्नों के वर्णनात्मक उत्तर देने को कहा जाएगा जिसे बच्चे कार्यपत्रक में लिखेंगे। शिक्षक इस कार्य में बच्चों की मदद करेंगे।

कार्यपत्रक संख्या एक को पूरा करवाने के पश्चात् बच्चों को कार्यपत्रक संख्या दो को पढ़कर पूरा करने का निर्देश शिक्षक देंगे। बच्चे अनुच्छेद को ध्यान से पढ़कर उनके प्रश्नों का उत्तर अपने अनुसार कार्यपत्रक पर लिखेंगे।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक पुनः बच्चों को कोई घटना सुनाएँगे एवं उनसे संबंधित प्रश्न पूछेंगे। बच्चे इन प्रश्नों के उत्तर अपनी समझ के अनुसार देंगे।

कार्यपत्रक संख्या एक व कार्यपत्रक संख्या दो का सारांश शिक्षक बच्चों को बताएँगे तथा उनके द्वारा लिखे गए उत्तरों की समीक्षा भी की करेंगे। समीक्षा करने के बाद बच्चों को उचित पुनर्बलन दिया जाएगा।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक संख्या तीन को ध्यान से पढ़कर उनका उत्तर वर्णनात्मक–शैली में घर से लिखकर लाने को कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 2

दिवस–08

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे कविता को धाराप्रवाह पढ़ते हैं और उसका अर्थ समझकर उत्तर देते हैं।

सहायक सामग्री– महाराणा प्रताप का चित्र।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक महाराणा प्रताप की संक्षिप्त कहानी बच्चों को सुनाएँगे और बताएँगे कि आज हम लोग महाराणा प्रताप से संबंधित चित्तौड़गढ़ दुर्ग पर आधारित कविता पढ़ेंगे।

शिक्षण के मध्य में –

शिक्षक कविता का ओजपूर्ण स्वर में गायन करेंगे और बच्चों से भी अनुगायन कराएँगे।

भाला बरछी तलवार लिए
आये खरधार कटार लिए।
धीरे–धीरे झुक–झुक बैठे
सरदार सभी हथियार लिए।
तरकस में कस–कस तीर भरे
कन्धों पर कठिन कमान लिए।
सरदार भील भी बैठ गए
झुक–झुक रण के अरमान लिए।
जब एक–एक जन को समझा
जननी–पद पर मिटने वाला।
गम्भीर भाव से बोल उठा
वह वीर उठा अपना भाला।

शिक्षक कविता का अर्थ बच्चों को समझाएँगे।

गतिविधि–

अध्यापक राणा प्रताप के घोड़े पर आधारित कविता–'हल्दी घाटी' के युद्ध का बच्चों से समूह गायन करवाएँगे।

शिक्षण के अंत में

कविता के छोटे–छोटे अंशों का वाचन बच्चों से करवाएँगे। शिक्षक बच्चों से कार्यपत्रक को दिए गए निर्देशों के अनुसार पूर्ण करने के लिए कहेंगे। इस कार्य में आ रही कठिनाईयों को शिक्षक दूर करेंगे।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक में दिऐ गए निर्देशों के अनुसार घर से लिखकर लाने के लिए कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 2

दिवस–09

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे समझ के साथ पढ़ते हैं और प्रश्नों के उत्तर देते हैं।

सहायक सामग्री– विषय से संबंधित सामग्री।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक बच्चों से सामान्य बातचीत करेंगे और पूछेंगे कि आप अपने मन की बात दूसरों तक पहुँचाने के लिए क्या करते हैं? हम जो भाषा बोलते हैं उसका क्या नाम है? (इस तरह के प्रश्नों के बाद शिक्षक बच्चों को बताएँगे कि हम अपने भावों को जिस माध्यम से व्यक्त करते हैं, उसे भाषा कहते हैं और हम जिस भाषा में बातचीत करते हैं, उसका नाम हिन्दी है। आज हम हिन्दी भाषा पर चर्चा करेंगे।)

शिक्षण के मध्य

शिक्षक अनुच्छेद का आदर्श वाचन करने के बाद बच्चों को मौन वाचन करने का निर्देश देंगे।

प्रत्येक देश की अपनी एक पहचान होती है, विशिष्ट भाषा होती है, जो उनके नागरिकों द्वारा बोली जाती हैं, जिनमें हिन्दी एक प्रमुख भाषा है। भारत देश की हिन्दी भाषा ने हमें विश्व में एक अलग पहचान दिलाई है। हिन्दी विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में तीसरे स्थान पर है । 14 सितम्बर 1994 ई० को भारत सरकार ने हिन्दी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया तथा हिन्दी, दस राज्यों– उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, उत्तराखण्ड, हरियाणा, दिल्ली, बिहार, झारखण्ड, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश की भी राजभाषा है। हिन्दू देश में हिन्दी बोलने समझने वालों की संख्या सर्वाधिक है। हिन्दी की कुल पाँच उपभाषाएँ तथा अट्ठारह बोलियाँ हैं।

हिन्दी भाषा तथा इसकी बोलियों में बहुत समृद्ध साहित्य लिखा गया है, जिनमें से कुछ हम अपनी पाठ्य पुस्तकों में पढ़ते हैं। जैसे आपकी पाठ्य पुस्तक में सूरदास के पद हैं जो ब्रजभाषा में हैं तथा तुलसीदास के पद अवधी में हैं। इसी प्रकार इसकी अन्य बोलियों में भी साहित्य लिखा गया है।

(शिक्षक कुछ बच्चों से इस अनुच्छेद का अनुकरण वाचन भी करवाएँगे)

शिक्षक– 'हिन्दी' को 'संघ की राजभाषा कब स्वीकार किया गया?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)

शिक्षक–– हिन्दी भारत के कितने राज्यों की राजभाषा है ?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)

शिक्षक–– हिन्दी की कुल कितनी उपभाषाएँ हैं?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)

शिक्षक–– हिन्दी की कुल कितनी बोलियाँ हैं?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)

शिक्षक–– सूरदास के पद किस बोली में हैं?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)

शिक्षण के अंत में

शिक्षक हिन्दी भाषा के महत्व पर एक बार पुनः समूह चर्चा करेंगे तथा बच्चों के साथ मिलकर एक गतिविधि करवाएँगे–

गतिविधि– समूह में कविता का गायन

एक डोर में सबको जो बाँधती
वह हिन्दी है
हर भाषा को सगी बहन जो मानती
वह हिन्दी है।

भरी–पूरी हों सभी बोलियाँ
यही कामना हिन्दी है।
गहरी हो पहचान आपसी
यही साधना हिन्दी है
तत्सम तद्भव देशी विदेशी
सब रंगों को अपनाती
जैसे आप बोलना चाहें
वही मधुर, मनभाती ।

(गिरिजा कुमार माथुर)

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक में दिऐ गए निर्देशों के अनुसार घर से लिखकर लाने के लिए कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के 2 कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 2

दिवस–10

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे स्थानीय घटनाओं/चित्रों/दृश्यों को देखने के बाद अपने अनुभव मौखिक एवं लिखित भाषा में व्यक्त करते हैं।

सहायक सामग्री– विद्यालय की दीवार पर बने चित्र।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक बच्चों से उनकी रुचि पर बात करते हुए पूछेंगे कि उन्हें अपने आस–पास कौन–कौन से जानवर देखने को मिलते हैं? उनमें से किन–किन जानवरों को पालना तथा उनके साथ खेलना उन्हें पसन्द है।

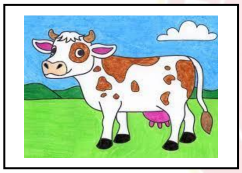
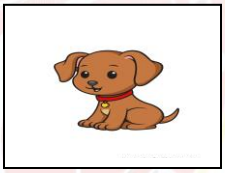

बच्चों से बात करें कि पालतू जानवरों के बीमार होने पर क्या उन्हें इलाज के लिए डॉक्टर के पास ले जाया जाता है?

बच्चे प्रतिक्रिया देते हैं।

शिक्षण के मध्य

बच्चों की प्रतिक्रिया सुनने के बाद शिक्षक उन्हें एक कहानी सुनाएँगे–

यह जानकारी हम लोगों के लिए एकदम नई और विस्मयकारी थी। ठंड के दिन थे और मुहल्ले में आवारा घूमने वाली एक कुतिया ने वकील साहब की कोठी के पीछे पड़ी सूखी टहनियों के ढेर के नीचे तीन पिल्ले दिए थे। पिल्ले बड़े सुन्दर थे। मैं और मंटू उनसे खेला करते थे। ऑक के दूध के भयानक असर की जानकारी

मिलने के अगले दिन जब मैं स्कूल से आकर खाना—खाने के बाद मंटू के साथ खेलने गया तो मैंने देखा, मंटू ऑक के पौधों के पास बैठा है उसके घुटनों में दबा पिल्ला कें—कें कर रहा था। दो पिल्ले आस—पास ही कूँ—कूँ करते इधर—उधर भटक रहे थे। नजदीक जाकर मैंने देखा तो हैरान रह गया। मंटू ऑक के पत्ते तोड़— तोड़ कर उनका दूध पिल्ले की आँखों में डाल रहा था।

मंटू के इस कुकृत्य की जानकारी केवल मुझे ही थी। मैंने उसे उन प्यारे—प्यारे पिल्लों को अन्धा बना देने के लिए बहुत बुरा—भला कहा था और वकील साहब से शिकायत करने की धमकी भी दी थी। उसने गिड़गिड़ा कर मुझसे कहा था कि यह बात मैं किसी को न बताऊँ। मैं शायद बताता भी नहीं, लेकिन जब उन तीन पिल्लों में से दो, दिन—रात कूँ—कूँ करते इधर से उधर भटकते मर गए। मुझे बहुत दुःख हुआ और उस दिन मैं बहुत रोया।

कहानी सुनाने के बाद शिक्षक बच्चों से इस की प्रकार भी उनके जीवन में घटित कुछ घटनाओं को सुनेंगे।

इसके पश्चात् कार्यपत्रक देकर उनका अनुभव लिखने को कहेंगे।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक बच्चों द्वारा लिखे कार्यपत्रकों की जाँच करेंगे तथा जिन बच्चों को किसी प्रकार की लेखन समस्या आ रही हो उनका यथासम्भव समाधान करेंगे। लेखन में वर्णो तथा मात्राओं की शुद्धता पर विशेष ध्यान देंगे।

प्रदत्त कार्य— शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक में दिऐ गए निर्देशों के अनुसार घर से लिखकर लाने के लिए कहेंगे।

(**नोट—** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 3

दिवस–11

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे किसी पाठ्यवस्तु/समाचार–पत्र/पत्रिका के शीर्षक/कहानी/ इंटरनेट पर प्रकाशित सामग्री को समझते हैं, साथ ही सही उच्चारण करते हुए पढ़ते हैं।

सहायक सामग्री– कहानी की किताब, कहानी चार्ट।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक बच्चों को निम्नलिखित अनुच्छेद पढ़ने के लिए कहेंगे–

महामना मदन मोहन मालवीय का जन्म ऐसे कालखण्ड में हुआ था, जिस समय भारत नवजागरण के साथ–साथ स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए संघर्षरत था। जिस काल में मालवीय जी का जन्म हुआ वह समय भारत में बौद्धिक और वैचारिक जागरण का था। उस समय बहुत से समाज सुधारक भारत देश को उसकी मूल राष्ट्रीय और आध्यात्मिक चेतना की ओर लौटने के लिए प्रयासरत थे।

महामना मदन मोहन मालवीय ने भारतीय स्वतन्त्रता की ऐसी नींव रखी जिसके परिणाम स्वरूप 15 अगस्त सन 1947 ई0 को हमारा देश स्वतन्त्र हुआ। महामना मदन मोहन मालवीय भारतीय स्वाधीनता संघर्ष के नायक और साक्षी थे। इनका जन्म 25 दिसम्बर सन 1861 ई0 को प्रयागराज में हुआ था। उनके पिता पण्डित ब्रजनाथ चतुर्वेदी और माता श्रीमती मूनादेवी थीं।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक बच्चों को इस अनुच्छेद को पढ़कर निम्नांकित अवधारणा चित्र को पूरा करने के लिए कहेंगे–

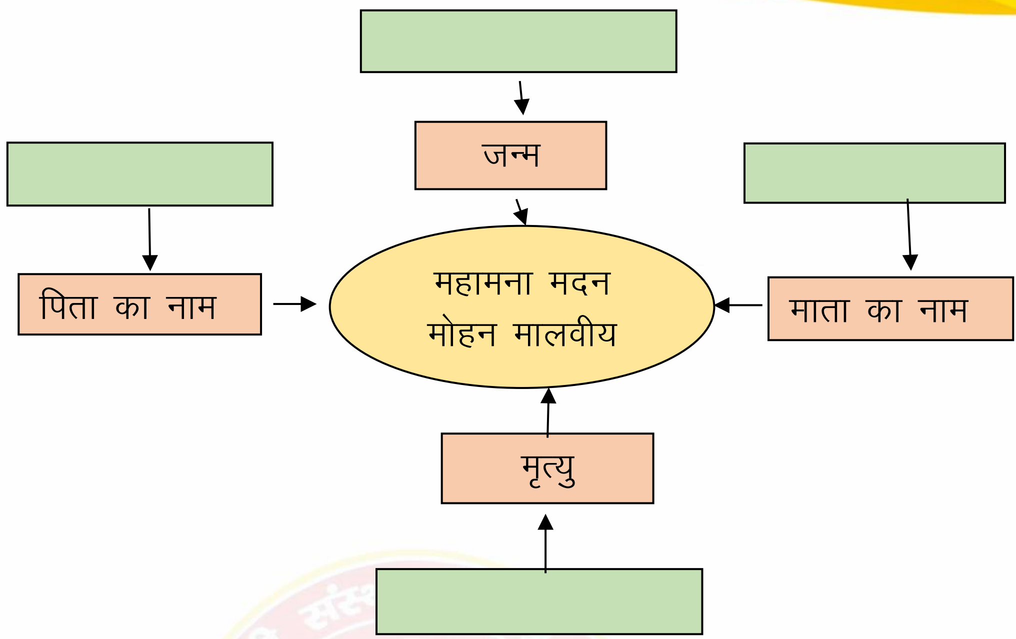

शिक्षण के अंत में

शिक्षक बच्चों से निम्नलिखित कठिन शब्दों का उच्चारण करवाएँगे—

स्वतंत्रता, संघर्षरत, बौद्धिक, अध्यात्मिक, सांस्कृतिक, अनुयायी, दृष्टिकोण, दिवास्वप्न, समर्पित, प्राकृतिक, अस्पृश्यता, उद्धरणों, विश्वविद्यालय, महायज्ञ, सम्मेलन, पुनरुत्थान, सर्वांगीण, अपरिहार्य, मीमांसा।

प्रदत्त कार्य— शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक में दिऐ गए निर्देशों के अनुसार घर से लिखकर लाने के लिए कहेंगे।

(**नोट—** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 3

दिवस–12

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– छात्र गद्य को पढ़कर उसमें निहित भावों को समझते हुए प्रश्नों के उत्तर देने में सफल होते हैं।

सहायक सामग्री– कार्यपत्रक, चार्ट पर लिखा हुआ अपठित गद्यांश।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक बच्चों से सामान्य बातचीत करेंगे और उनके आसपास की घटनाओं को सुनते हुए उनसे बीच–बीच में प्रश्न पूछते जाएँगे, जैसे–

मैं घर से निकली ही थी कि अचानक, एक कुत्ता सामने आ गया और मेरे साथ–साथ चलने लगा। वह कभी मेरे आगे जाता तो कभी मेरे पीछे और कुछ देर बाद ही वह मेरे आगे पीछे दुम हिलाने लगा।

प्रश्न– कुत्ता क्या कर रहा था?

उत्तर– साथ–साथ चलने लगा था।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक चार्ट पर लिखे अनुच्छेद को बच्चों को दिखाने के साथ उस पर आधारित गतिविधि बच्चों से करवाएँगे–

खेल, पढ़ाई तथा भ्रमण (घूमना); ये सभी <u>क्रियाएं</u> हमारे जीवन के लिए आवश्यक हैं। इनसे हमें ज्ञान और अनुभव प्राप्त होता है। खेल से हमारा शरीर और मस्तिष्क स्वस्थ होता है और जगह–जगह घूमने से अनुभव मिलता है। भारत में घूमने के लिए अनेक पर्यटक स्थल हैं। इसके उत्तर में हिमालय पर्वत की बर्फ से ढकी

चोटियाँ, दक्षिण में समुद्र की विशाल जल–राशि, पूर्व में बड़े–बड़े मैदान और पश्चिम में रेगिस्तान। जब हम भारत के विभिन्न दिशाओं में भ्रमण करने जाते हैं तब हम अपनी संस्कृति–सभ्यता तथा रहन–सहन के तौर–तरीकों की विविधता से परिचित होते हैं तथा पुस्तकों के अध्ययन से भी हमें अपने ज्ञान की वृद्धि का अवसर मिलता है।

शिक्षक बच्चों को गद्‌यांश पढ़कर सुनाएँगे तथा उसके भाव को समझाएँगे उसके बाद प्रश्न पूछेंगे फिर उनके उत्तर कॉपी में लिखने के लिए प्रोत्साहित भी करेंगे।

- भ्रमण से हमें क्या–क्या प्राप्त होता है?
- प्रस्तुत अनुच्छेद में हमारे जीवन के लिए किन क्रियाओं का होना आवश्यक है?
- भारत की किस दिशा में बर्फ से ढकी चोटियाँ हैं?
- ज्ञान और अनुभव कैसे मिलता है?
- प्रस्तुत अनुच्छेद का उचित शीर्षक बताइए?

शिक्षण के अंत में

बच्चो, आज हम लोगों ने गद्‌यांश को पढ़कर उसमें निहित भाव को समझने का प्रयास किया। (भाव को समझाने के बाद उनका उत्तर किस प्रकार से दिया जाएगा, बच्चों को बताया गया। बच्चों को उत्तर लिखने के लिए शिक्षक द्वारा प्रोत्साहित किया जाएगा।)

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक में दिऐ गए निर्देशों के अनुसार घर से लिखकर लाने के लिए कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 3

दिवस–13

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे कहानी को आगे बढ़ाकर उसका अंत बदल कर लिखते हैं।

सहायक सामग्री– कार्यपत्रक, फ्लैश कार्ड आदि।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक कक्षा के वातावरण को सहज बनाने के लिए बच्चों से कुछ सामान्य प्रश्न पूछेंगे, जैसे–

शिक्षक– आपने अपने आस–पास कौन–कौन से पशु या जानवर देखे हैं ? उनके नाम बताइए।

बच्चे–...¼संभावित उत्तर½

शिक्षक– वे पक्षी जो काले रंग के होते हैं ? उनके नाम बताइए।

बच्चे– ...¼संभावित उत्तर½

शिक्षण के मध्य

शिक्षक गिलहरी और कौआ की कहानी बच्चों को सुनाएँगे। कहानी के आधार पर कुछ प्रश्न बच्चों से पूछेंगे । शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक संख्या दो में दी गयी कहानी को पढ़कर उसे आगे बढ़ाने की प्रक्रिया समझाएँगे और अंत कैसे बदलते हैं, यह भी समझाएँगे। शिक्षक बच्चों से कहानी आधारित प्रश्न भी पूछेंगे।

- कौआ पेड़ की डाल पर बैठकर क्या कर रहा था?
- कौए की जगह तुम रहते तो कौन–सा गीत गाते?

- 'कूप–मण्डूक' का अर्थ बताइए।
- वर्षा–काल में तुम क्या करते हो?

शिक्षण के अंत में

शिक्षक स्वनिर्मित एक छोटी कहानी बच्चों को सुनाएँगे उसके बाद बच्चों से उस कहानी से संबंधित कुछ प्रश्न पूछेंगे साथ ही साथ कहानी के अंत को किस प्रकार से बदला जा सकता है, यह भी बताएँगे। कार्यपत्रक पर कार्य करवाया जाएगा। इस कार्य को करने में बच्चों को प्रोत्साहन देने के साथ ही साथ आ रही कठिनाइयों को भी दूर किया जाएगा।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक में दिऐ गए निर्देशों के अनुसार घर से लिखकर लाने के लिए कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 3

दिवस–14

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे संज्ञा शब्द एवं उनके प्रकार की पहचान करते हैं एवं उसकी परिभाषा भी बताते/लिखते हैं।

सहायक सामग्री– कक्षा–कक्ष में उपलब्ध सभी व्यक्ति/वस्तुएं, विभिन्न प्रकार के चित्र वाले चार्ट।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक बच्चों से वार्तालाप करते हुए कक्षा–कक्ष में उपस्थित विभिन्न वस्तुओं एवं व्यक्तियों के नाम पूछेंगे।

जैसे– किसी बच्चे की तरफ इशारा करते हुए पूछेंगे कि

1. इस बच्चे का नाम क्या है?
2. जिस वस्तु पर तुम लिखते हो, उसका नाम क्या है?
3. जिस वस्तु से तुम लिखते हो, उसका नाम क्या है?
4. जिस मौसम में हम गर्म कपड़े पहनते हैं, उस मौसम का क्या नाम है?
5. आप जहाँ रहते हैं, उस स्थान का क्या नाम है? इत्यादि–

बच्चे प्रश्नों के उत्तर में उन वस्तुओं के नाम बताएँगे।

शिक्षक बच्चों को बताएँगे कि आज हम विभिन्न नामों एवं उनके प्रकार के बारे में अध्ययन करेंगे।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक बच्चों को संज्ञा की परिभाषा बताकर समझाएँगे एवं श्यामपट्ट पर लिखेंगे।

संज्ञा – जिस शब्द के द्वारा किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान अथवा भाव के नाम का बोध हो, उसे संज्ञा कहते हैं। जैसे – रोहन, सुहानी , पुस्तक, वाराणसी, मिठास, हाथी, औरत आदि।

शिक्षक बच्चों को बताएँगे कि संज्ञा के पाँच भेद होते हैं–

1– व्यक्तिवाचक संज्ञा 2– जातिवाचक संज्ञा

3– समूहवाचक संज्ञा 4– द्रव्यवाचक संज्ञा

5– भाववाचक संज्ञा

शिक्षक श्यामपट्ट पर कुछ संज्ञा शब्द लिख देंगे एवं बच्चों से पूछेंगे कि प्रत्येक पंक्ति में से जो नाम उन्हें विशेष लग रहा हो उसे बताएँ, जैसे– लड़का, लड़की, आदमी, मोहन, जानवर, घोड़ा, पशु, गाँव, शहर, लखनऊ आदि।

जब बच्चे विशेष संज्ञा शब्दों को छाँटकर बता दें, तो उसे श्यामपट्ट पर एक तरफ लिख देंगे, यदि कोई शब्द बच्चों से छूट जाए तो उसे भी लिख देंगे।

बच्चों को व्यक्तिवाचक संज्ञा के विषय में समझाते हुए उसकी परिभाषा लिखवा देंगे।

व्यक्तिवाचक संज्ञा– जिन शब्दों से किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु अथवा स्थान का बोध हो, उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं। यह सदैव एकवचन में होती है अर्थात् इससे केवल एक व्यक्ति या वस्तु का बोध होता है, जैसे– मोहन , घोड़ा, लखनऊ, गंगा आदि।

बच्चों को भी व्यक्तिवाचक संज्ञा के कुछ उदाहरण बताने को कहेंगे।

बच्चों से शिक्षक पूछेंगे कि आम, केला, सेब; ये सब क्या है?

बच्चे बताएँगे– फल।

क्रिकेट, रस्सी कूद, दौड़; ये सब क्या हैं?

बच्चों का उत्तर 'खेल' होगा।

अर्थात् आम, केला, सेब एक जाति के हैं, जो 'फल' हैं और क्रिकेट, रस्सी कूद, दौड़ एक जाति के हैं जो 'खेल' हैं।

जातिवाचक संज्ञा– जिस शब्द से किसी प्राणी या वस्तु की सम्पूर्ण जाति का बोध होता है, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं, जैसे– फूल, पेड़, लड़का, औरत इत्यादि।

बच्चों को चार समूह बनाने को कहेंगे और पूछेंगे कि हर समूह में कितने लोग हैं? जब वे बतायेंगे तो शिक्षक पुनः पूछेंगे कि क्या एक व्यक्ति का भी समूह बन सकता है? बच्चों का जवाब नकारात्मक होगा।

अब बच्चों को समूहवाचक संज्ञा का अर्थ एवं परिभाषा बताएँगे।

समूहवाचक संज्ञा– जिस शब्द का प्रयोग व्यक्तियों या वस्तुओं के समूह को परिभाषित करने के लिए किया जाता है, वह शब्द समूहवाचक संज्ञा होता है। (इसमें व्यक्ति, पशु, निर्जीव वस्तुएं इत्यादि का समूह हो सकता है।) जैसे– भीड़, झुंड, दल, गुच्छा, पार्टी, टोली इत्यादि।

उदाहरण के लिए बच्चों से भी कुछ समूहवाचक संज्ञा का नाम पूछ लेंगे।

शिक्षक बच्चों से पूछ सकते हैं कि– कुर्सी किस धातु/ वस्तु से बना है?

चाय बनाने के लिए कौन–कौन से पदार्थ प्रयोग करते हैं ?

बच्चों के उत्तर लकड़ी/प्लास्टिक और दूध, पानी, चीनी होगा। अब बच्चों को द्रव्यवाचक संज्ञा के बारे में बताएँगे।

द्रव्यवाचक संज्ञा– जिस शब्द से किसी द्रव्य, पदार्थ या धातु का बोध होता है, उसे द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं, जैसे– सोना, चाँदी, दूध, अनाज आदि।

बच्चों से कुछ उदाहरण बताने को कहेंगे ।

शिक्षक बच्चों से पूछेंगे कि यदि आपको कोई डाँटता है तो आपको कैसा महसूस होता है? सुख या दुःख।

ज्यादा देर धूप में रहने पर कैसा महसूस होता है? गर्मी या ठंडी

बच्चों के जवाब के बाद उन्हें बताएँगे कि सुख, दुख, गर्मी, ठंडी भावनाएं है। अब भाववाचक संज्ञा की परिभाषा बताएँगे।

भाववाचक संज्ञा– जिन शब्दों से किसी व्यक्ति, वस्तु के गुण, धर्म, दोष, शील, भाव अवस्था आदि का बोध हो, वे शब्द भाववाचक संज्ञा कहलाते हैं, जैसे– बुढ़ापा, गर्मी, ठंडी, मोटापा, थकावट इत्यादि।

भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण जातिवाचक संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया और अव्यय में प्रत्यय लगाकर होता है।

जैसे– बच्चा में पन प्रत्यय से बना बचपन (भाववाचक संज्ञा) बच्चों से लड़का और रूखा आदि शब्दों मे प्रत्यय जोड़कर भाववाचक संज्ञा बनाने को कहेंगे।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक चार्ट दिखाएँगे एवं बच्चों से पूछेंगे कि इसमें से संज्ञा शब्द बताएं।

बच्चों से संज्ञा के भेद पूछेंगे।

बच्चों को पाँच समूह में बाँटकर प्रत्येक समूह को संज्ञा के भेद के अनुसार प्रत्येक समूह को दो–दो वाक्य बनाने को कहेंगे।

कुछ शब्द–समूह से संज्ञा के भेद बताने को कहेंगे, जैसे– राम, पशु, कोयल, अपनापन, लोहा, महात्मा गांधी आदि।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक में दिऐ गए निर्देशों के अनुसार घर से लिखकर लाने के लिए कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 3

दिवस–15

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे सर्वनाम एवं उसके भेद की अवधारणा को समझते हैं एवं उनका उचित प्रयोग करते हैं।

सहायक सामग्री– संज्ञा शब्द प्रयुक्त वाक्यों की पर्चियाँ आदि सहायक सामग्री।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

सर्वप्रथम शिक्षक बच्चों को एक अनुच्छेद सुनाएँगे और उसे श्यामपट्ट पर भी लिख देंगे। श्यामपट्ट के दूसरे भाग में उसी अनुच्छेद के कुछ संज्ञा शब्दों को सर्वनाम शब्दों से बदलकर लिख देंगे, और बच्चों से दोनों अनुच्छेद में अन्तर पूछेंगे तथा बच्चों के विचार सुनेंगे।

अनुच्छेद

ब्रह्मदत्त एक विवेकशील राजा था। ब्रह्मदत्त सत्यासत्य, उचित– अनुचित का सदा ध्यान रखता था। ब्रह्मदत्त ऐसे व्यक्ति को ढूँढता था, जो ब्रह्मदत्त के दोषों को बता सके। प्रशंसा करने वाले तो सभी थे, दोष बताने वाला कोई नहीं मिलता था।

परिवर्तित अनुच्छेद

ब्रह्मदत्त विवेकशील राजा था। वह सत्यासत्य, उचित–अनुचित का सदा ध्यान रखता था। वह ऐसे व्यक्ति को ढूँढ़ता था, जो उसके दोषों को बता सके किन्तु दोष बताने वाला कोई नहीं मिलता था।

दोनों अनुच्छेदों में पढ़ने में ज्यादा सही/अच्छा कौन–सा लग रहा है? और क्यों?

शिक्षण के मध्य

दोनों अनुच्छेदों में अंतर समझाते हुए बच्चों को सर्वनाम के विषय में बताएँगे और परिभाषा भी लिखेंगे।

परिभाषा– जो शब्द संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाते हैं, उन्हें सर्वनाम कहते हैं।

जैसे– मैं, तुम, वह, अपने, उसके, तुम्हारा, हमारा, यह, वह आदि।

गतिविधि–

1. बच्चों को एक–एक वाक्य लिखी हुई पर्ची बाँट देंगे।
2. उन्हें वाक्य में प्रयुक्त संज्ञा शब्द को सर्वनाम शब्द से बदलकर बताने को कहेंगे।

जैसे– सुहानी खेल रही है। राजू रवि के घर गया।

बच्चे रेखांकित संज्ञा शब्द को सर्वनाम शब्द से बदलकर बोलेंगे।

शिक्षक बच्चों को सर्वनाम के भेदों को स्पष्ट करेंगे।

सर्वनाम के मुख्य रूप से छह भेद होते हैं –

1– **पुरुषवाचक सर्वनाम–** पुरुषवाचक सर्वनाम किसी व्यक्ति के नाम के स्थान पर प्रयोग किए जाते हैं। पुरुषवाचक सर्वनाम तीन प्रकार के होते हैं–

- **उत्तम पुरुष–** जो सर्वनाम हम अपने लिए प्रयोग करते है, जैसे– मैं, हम, हमारा, हमें मेरा, मेरी आदि।
- **मध्यम पुरुष–** जिस सर्वनाम का प्रयोग हम सुनने/सामने वाले के लिए करते हैं, जैसे– तुम, तुम सब, आपका आदि।
- **अन्य पुरुष–** जिसके बारे में बात की जाती है, वह अन्य पुरुष होता है, जैसे– वह, वे आदि ।

बच्चों को तीनों पुरुषवाचक सर्वनाम का प्रयोग करके तीन–तीन वाक्य (प्रत्येक के लिए एक) लिखकर बताने को कहेंगे।

2– निजवाचक सर्वनाम– जिस शब्द से अपनेपन का बोध हो अर्थात् जो सर्वनाम हम स्वयं के लिए प्रयोग करते हैं, वह निजवाचक सर्वनाम होता है।

जैसे– स्वयं, अपना, आपने–आप, स्वतः, खुद आदि बच्चों को उदाहरण देकर स्पष्ट कर देंगे।

मैं यह कार्य अपने आप कर लूँगा।

इस वाक्य में 'मैं' पुरुषवाचक सर्वनाम है, जबकि 'अपने–आप' निजवाचक सर्वनाम है।

कुछ वाक्य श्यामपट्ट पर लिखकर बच्चों से निजवाचक सर्वनाम बताने को कहेंगे, जैसे–

1– आप सभी हमारे अपने हैं। 2– तुम्हें अपना कार्य खुद करना चाहिए।

3– यह मेरी अपनी कमीज है आदि।

3– अनिश्चयवाचक सर्वनाम– वह सर्वनाम जो किसी अनिश्चित व्यक्ति या वस्तु का बोध कराता है, उसे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं, जैसे– कोई, कुछ आदि।

1– जल में कुछ गिर गया है। 2– कोई आ रहा है।

बच्चों से पूछेंगे कि क्या उपरोक्त वाक्यों में 'कुछ' या 'कोई' शब्द से किसी निश्चित वस्तु या व्यक्ति का बोध हो रहा है?

इस प्रकार अवधारणा स्पष्ट करेंगे और बच्चों से भी कुछ वाक्य पूछेंगे।

4– निश्चयवाचक सर्वनाम– वह सर्वनाम जो किसी निश्चित वस्तु या व्यक्ति की दूरी या निकटता का बोध कराता है, जैसे– वह, यह, इस, उस, ये, वे आदि।

1– यह किताब है। 2– वह पंखा है।

बच्चों से कक्षा में उपलब्ध वस्तुओं को बताने के लिए निश्चयवाचक सर्वनाम का प्रयोग करके वाक्य बनाने को कहेंगे।

5– संबंधवाचक सर्वनाम– जिस सर्वनाम शब्द से किसी व्यक्ति, वस्तु या घटना आदि से संबंध प्रकट हो, उसे संबंधवाचक सर्वनाम कहते हैं, जैसे– जो, जिसे, जैसे आदि।

मैं वही खाता हूँ जो माँ बनाती है।

यह वही गुड़िया है जो तुमने माँगी थी।

6– प्रश्नवाचक सर्वनाम– जिन सर्वनाम शब्दों से किसी व्यक्ति, वस्तु के विषय में प्रश्न पूछे जाते हैं, उन्हें प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं, जैसे– कौन, किसका, क्या, कहाँ आदि।

1– तुम कहाँ पढ़ते हो? 2– वह कौन है?

शिक्षण के अंत में

शिक्षक बच्चों से सर्वनाम की परिभाषा पूछेंगे एवं उनके अंतर को स्पष्ट करेंगे।

सर्वनाम के प्रकार के नाम बच्चे बताएँगे।

शिक्षक बच्चों को कुछ शब्द बोलेंगे और उन्हें दो समूह में बाँटकर प्रत्येक समूह से पूछेंगे कि यह शब्द किस सर्वनाम का है।

जो समूह ज्यादा सही उत्तर देगा वह समूह जीत जायेगा।

जैसे– वह, मेरा, किसका, कोई, तुम, अपना इत्यादि।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक में दिऐ गए निर्देशों के अनुसार घर से लिखकर लाने के लिए कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 4

दिवस–16

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे विशेषण शब्दों और उसके भेदों की पहचान करते हैं।

सहायक सामग्री– चित्र, कार्य–पत्रक इत्यादि सहायक सामग्री।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक बच्चों को एक पेड़ का चित्र दिखाएँगे और बच्चों से चित्र पर चर्चा–परिचर्चा करते हुए प्रश्न करेंगे और सभी बच्चों को गतिविधि में शामिल करने का प्रयास करेंगे।

प्रश्न–	**उत्तर–**
1– यह किसका चित्र है ?	पेड़ का
2– यह पेड़ कैसा है ?	बड़ा और मोटा
3– इस पेड़ का रंग कैसा है ?	हरा
4– यह पेड़ दिखने में कैसा लग रहा है ?	हरा–भरा और सुन्दर
5– जिन शब्दों से पेड़ के विषय में पता चल रहा है, उसे क्या कहते हैं?	समस्यात्मक

शिक्षण के मध्य

शिक्षक चित्र पर चर्चा करते हुए बच्चों के पूर्व ज्ञान को जानने और विशेषण की अवधारणा को स्पष्ट करने का प्रयास करते हैं।

शिक्षक श्यामपट्ट पर लिखेंगे:–

परिभाषा– संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता प्रकट करने वाले शब्दों को विशेषण कहते हैं, जैसे–मधुमक्खियों के छत्ते में **मीठा** शहद है।

- राहुल **सुन्दर** चित्रकारी करता है।

यहाँ सुन्दर और मीठा दोनों शब्द संज्ञा के बारे में कुछ विशेष बता रहे हैं।

- पहले संज्ञा या सर्वनाम शब्द को पहचानेंगे।
- फिर संज्ञा के साथ कैसा, कैसी, कितना आदि लगाकर प्रश्न पूछेंगे ?

जैसे– आम कैसा होता है?

उत्तर होगा –आम स्वादिष्ट होता है; यहाँ 'स्वादिष्ट' विशेषण है।

विशेष्य– विशेषण जिस संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताता है, उसे विशेष्य कहते हैं, जैसे–

लम्बी रेलगाड़ी,

यहाँ 'लम्बी' विशेषण है और 'रेलगाड़ी' विशेष्य है।

गतिविधि 1–

शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक संख्या एक देंगे और यह जानने का प्रयास करेंगे कि विशेषण की अवधारणा की समझ विकसित हुई या नहीं।

गतिविधि 2–

शिक्षक कक्षा को दो समूह, क्रमशः विशेषण और विशेष्य में बाँट देंगे और दिए गए अनुच्छेद से समूह के नाम अनुसार विशेषण और विशेष्य शब्दों को छाँटने के लिए कहेंगे।

मीना गर्मी की छुट्टियों में अपनी नानी के गाँव गई। नानी के गाँव में चारों–ओर बहुत हरियाली थी। गाँव के पास एक गहरी नदी थी। नदी में बहुत–सी मछलियाँ और कछुए थे। एक दिन मीना नानी के साथ गाँव की सैर पर निकली, मीना ने गाँव के हरे–भरे खेत देखे, मोटे नीम के पेड़ पर झूला झूला, बहुत सारे मीठे आम खाए, नदी में नाव की सैर भी की। रामू काका की काली गाय का ताजा दूध भी पिया। गाँव में लगे मेले से रंग–बिरंगे गुब्बारे और मीठी जलेबी भी खाई। मीना को नानी के गाँव में बहुत मजा आया।

शिक्षक विशेषण की अवधारणा स्पष्ट करने के पश्चात् विशेषण के भेदों पर चर्चा करेंगे और उनकी परिभाषा स्पष्ट करेंगे।

विशेषण के भेद – मुख्य रूप से विशेषण के चार भेद होते हैं –

1– गुणवाचक विशेषण

2– परिमाणबोधक विशेषण

3– संख्यावाचक विशेषण

4– सार्वनामिक विशेषण

1–गुणवाचक विशेषण –जिस विशेषण शब्द से किसी संज्ञा अथवा सर्वनाम का गुण–प्रकट हो, उसे गुणवाचक विशेषण कहते हैं, जैसे –

- **गुण**– अच्छा, चालाक, बुद्धिमान आदि।
- **दोष**– बुरा, गंदा, दुष्ट आदि।
- **रंग**– काला, लाल, सफेद, हरा, नीला आदि।
- **आकार**– लंबा, छोटा, गोल, मोटा आदि।
- **अवस्था**– बीमार, घायल, क्षतिग्रस्त आदि।
- **स्थान**– पंजाबी, भारतीय, बंगाली, मारवाड़ी आदि।

2– परिमाणबोधक विशेषण –जिससे किसी वस्तु के परिमाण का बोध होता है उसे परिमाणबोधक विशेषण कहते हैं। **यथा**– थोड़ा पानी, बहुत दूध इत्यादि।

यहाँ पर 'थोड़ा' और 'बहुत' यह दोनों विशेषण हैं, जो क्रमानुसार पानी और दूध के परिमाण को समझा रहा है।

3– संख्यावाचक विशेषण – जिससे किसी वस्तु की संख्या का बोध होता है उसे संख्यावाचक विशेषण कहते हैं। यथा– एक किताब, दो मनुष्य, तीन लड़के इत्यादि।

यहाँ पर 'एक', 'दो' और 'तीन' ये तीनों विशेषण हैं, जिससे क्रमानुसार किताब, मनुष्य और लड़के की संख्या का बोध हो रहा है।

4– सार्वनामिक विशेषण – ऐसे सर्वनाम शब्द जो संज्ञा से पहले लगकर उस संज्ञा शब्द की विशेषण की तरह विशेषता बताते हैं, वे शब्द सार्वनामिक विशेषण कहलाते हैं। यह शब्द संज्ञा के लिए विशेषण का काम करते हैं।

जैसे– मेरी पुस्तक, कोई बालक, किसी का महल, वह लड़का, उसकी पुस्तक, वह लड़की आदि।

शिक्षण के अंत में

गतिविधि 3– विशेष्य और विशेषण को अलग कीजिए–

	विशेषण	विशेष्य
काली गाय	....	....
बहादुर बालक	....	....
निर्मल जल	....	....
मोटा हाथी	....	....
कठोर मनुष्य	....	....
भारी वाहन	....	....

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक में दिऐ गए निर्देशों के अनुसार घर से लिखकर लाने के लिए कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 4

दिवस–17

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे क्रिया और उसके भेदों की पहचान करते हैं।

सहायक सामग्री– चित्र, कार्य–पत्रक।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में–

शिक्षक बच्चों का ध्यान आकर्षित करने और शिक्षण को रोचक बनाने के लिए दी गई पहेली पर बच्चों से चर्चा–परिचर्चा करते हुए प्रश्न करेंगे और सभी बच्चों को गतिविधि में शामिल करने का प्रयास करेंगे।

बूझो तो जाने

प्रोजेक्टर से मैं चलता हूँ।
परदे पर मैं दिखता हूँ ,
मनोरंजन सबका करता हूँ।
जल्दी बताओ कौन हूँ मैं?

ऊपर दी गई पंक्तियों में चलता हूँ , करता हूँ , किसी काम का होना प्रकट करते हैं। ऐसे शब्द ही क्रिया शब्द कहलाते हैं।

गतिविधि 1–

शिक्षक कक्षा को चार समूह क्रमशः क, ख, ग, घ में विभाजित करेंगे और सभी को अलग–अलग पर्ची देंगे। पर्ची पर दिए निर्देश के अनुसार कार्य करने को कहेंगे।

- अगर आप के किसी साथी को चोट लग जाये तो आप क्या–क्या कार्य करेंगे?
- जल का प्रयोग करके हम प्रतिदिन क्या–क्या कार्य करते हैं?
- यदि आप भ्रमण पर जायें तो आप क्या–क्या तैयारियां करेंगे?
- विद्यालय में आप सुबह से छुट्टी होने तक क्या–क्या कार्य करते हैं?

क्रिया के प्रकार– कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद होते हैं।

1–अकर्मक क्रिया 2–सकर्मक क्रिया

1–अकर्मक क्रिया – अकर्मक क्रिया में क्रिया के साथ कर्म अनुपस्थित होता है और क्रिया का फल या प्रभाव कर्ता पर पड़ता है, जैसे–

श्याम सोता है।

इसमें 'सोना' क्रिया अकर्मक है, 'श्याम सोता है', सोने की क्रिया उसी के द्वारा पूरी होती है। अतः 'सोने' का फल उसी पर पड़ता है। इसलिए सोना क्रिया अकर्मक है।

2–सकर्मक क्रिया –जिस क्रिया का फल कर्म पर पड़े, उसे सकर्मक क्रिया हैं, जैसे–

राम फल खाता है।

यहाँ राम कर्ता, खाता क्रिया, एवं फल कर्म है।

खाने का प्रभाव फल पर है। अतः यहाँ सकर्मक क्रिया है।

गतिविधि 2–

शिक्षक सभी बच्चों को कार्यपत्रक देंगे और स्वयं मार्गदर्शक का कार्य करेंगे।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक क्रिया की अवधारणा स्पष्ट करते हुए पुनः परिभाषा बताएँगे। शिक्षक सभी बच्चों को अब अलग–अलग कार्यपत्रक देंगे और पत्रक में दिए निर्देश के अनुसार कार्य–पत्रक को भरने के लिए कहेंगे और यह जानने का प्रयास करेंगे की बच्चा कितना सीख रहा है।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक में दिऐ गए निर्देशों के अनुसार घर से लिखकर लाने के लिए कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 4

दिवस–18

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे पढ़े गए पद्याशों का भावार्थ अपने शब्दों में लिखते हैं।

सहायक सामग्री– वर्षा ऋतु पर आधारित कविता लिखा चार्ट।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक वर्षा ऋतु पर आधारित कविता लिखा चार्ट दिखाकर निम्नलिखित प्रश्न करेंगे।

शिक्षक– इस कविता में किस ऋतु का वर्णन है?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)

शिक्षक– बादल कब घिरते हैं?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)

शिक्षक– वर्षा के मौसम में किसान क्या करते हैं?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)

शिक्षण के मध्य

गतिविधि 1–

शिक्षक बच्चों को दो समूह में बाँट देंगे। समूह एक कविता की पंक्तियों को पढ़ेंगे और समूह दो उसका भावार्थ बताएँगे एवं अपनी कॉपी में लिखेंगे।

दामिनी यह गयी दमक
मेघ बजे
दादुर का कंठ खुला
मेघ बजे

धरती का हृदय धुला
मेघ बजे
पंक बना हरि चन्दन
मेघ बजे।
हल का है अभिनन्दन
मेघ बजे।

गतिविधि 2–

शिक्षक बच्चों के पाँच छोटे समूह बनाएँगे । प्रत्येक समूह में बच्चों को पर्ची पर लिखे शब्द बाँट देंगे। पर्ची पर लिखे शब्द होंगे–

1. दामिनी
2– दादुर
3– पंक
4– अभिनन्दन
5– मेघ

प्रत्येक समूह अपनी पर्ची पर लिखे शब्द के बारे में पाँच वाक्य अपनी कॉपी में लिखेंगे। यह कार्य समूह में बदल–बदल कर भी करवाए जाएँगे।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक बच्चों द्वारा लिखे वाक्य का अवलोकन करेंगे एवं बच्चों को और अच्छा लिखने के लिए प्रोत्साहित करेंगे। शिक्षक गतिविधि के दौरान बच्चों द्वारा लिखे गए वाक्यों को पढ़ने के लिए कहेंगे। जिस समूह द्वारा सबसे अच्छा वाक्य लिखा गया होगा, उसे सभी समूहों में सुनाया जाएगा एवं शाबाशी दी जाएगी।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक में दिऐ गए निर्देशों के अनुसार घर से लिखकर लाने के लिए कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 4

दिवस–19

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे पद्य को पढ़कर लेखन द्वारा रचना में निहित भाव/विचार को अपने अनुभवों के साथ स्पष्ट करते हैं।

सहायक सामग्री– भारत का मानचित्र या कोई प्राकृतिक दृश्य आदि ।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक बच्चों से भारत की भौगोलिक स्थिति के बारे में बात करेंगे। शिक्षक प्राकृतिक चित्रों का उदाहरण देते हुये कल्पना शक्ति के विकास के लिए चित्रों

को ध्यान से देखने के लिये कहेंगे। चित्रों पर शिक्षक बच्चों से कुछ प्रश्न पूछेंगे, जैसे–

शिक्षक– बच्चो! आपने इस चित्र में क्या–क्या देखा?

बच्चे–...¼संभावित उत्तर½

शिक्षक– भारत की भौगोलिक विशेषताओं के बारे में बताइए ?

बच्चे–...¼संभावित उत्तर½

शिक्षक– भारत की समृद्ध विरासत से आपका क्या तात्पर्य है?

बच्चे– ...¼संभावित उत्तर½

इस प्रकार के अन्य प्रश्न भी हो सकते हैं–

शिक्षण के मध्य

शिक्षक बच्चों से एक कविता का गायन करवाएँगे।

कह दे अतीत अब मौन त्याग,
लंके! तुझमें क्यों लगी आग
ऐ कुरुक्षेत्र! अब जाग, जाग
बतला अपने अनुभव अनन्त,
वीरों का कैसा हो वसंत ?
हल्दी–घाटी के शिला–खंड,
ए दुर्ग! सिंह–गढ़ के प्रचण्ड,
राणा, नाना का कर घमण्ड
दो जगा आज स्मृतियाँ ज्वलंत,
वीरों का कैसा हो वसंत ?

शिक्षक कविता शिक्षण के दौरान बच्चों को दो समूहों में बाँट देंगे जिसमें एक समूह कठिन शब्दों को बोलेगा तथा दूसरा समूह उन्हीं शब्दों को सही उच्चारण के साथ

दुहराएगा। शब्दों के सही उच्चारण के बाद शिक्षक की मदद से बच्चे उन्हीं शब्दों के अर्थ अपनी कार्यपुस्तिका में लिखेंगे।

अब शिक्षक बच्चों से कुछ शब्दों के माध्यम से कविता रचना करवाएँगे। शब्द इस प्रकार हो सकते हैं— पूरब, पश्चिम, नभ, वसुधा, अनुभव, अतीत, वसंत, आदि।

इसी अवधि में शिक्षक कार्यपत्रकों की जांच करेंगे तथा बच्चों का मूल्यांकन करेंगे।

शिक्षण के अंत में

बच्चों के कार्यों का मूल्यांकन करने के बाद बच्चों को आ रही कठिनाइयों का शिक्षक निवारण करेंगे। कविता निर्माण में आ रही समस्याओं को शिक्षक अपने स्तर से सुधार करेंगे। शिक्षक बच्चों से बोध प्रश्न करेंगे जिसमें मूल्यांकन, पुनरावृत्ति के प्रश्न भी हो सकते हैं जो समझ को और बेहतर बनाने में सहायक होंगे।

प्रदत्त कार्य— शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक में दिए गए निर्देशों के अनुसार घर से लिखकर लाने के लिए कहेंगे।

(**नोट**— बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 4

दिवस–20

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे प्राकृतिक और समसामयिक घटनाओं की जानकारी रखते हैं एवं उन पर क्रियात्मक लेखन करते हैं।

सहायक सामग्री– सूखा या अकाल से संबंधित चित्र, जल से परिपूर्ण एक चित्र, लहलहाते खेत, पंचायत का चित्र।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक बच्चों को बताएँगे कि पानी की जितनी आवश्यकता हो उतना ही उपयोग करना चाहिए। आवश्यकता से अधिक जल का उपयोग करने से जल समाप्त हो सकता है, जिससे भविष्य में जल की कमी का सामना हमें और हमारी आने वाली पीढ़ियों को करना पड़ सकता है। इस विषय पर शिक्षक बच्चों के अनुभव भी सुनेंगे।

शिक्षण के मध्य में–

शिक्षक बच्चों को कुछ चित्र दिखाकर प्राकृतिक घटनाओं के बारे में बताएँगे।

सूखाग्रस्त क्षेत्र का चित्र **हरियाली युक्त क्षेत्र का चित्र**

बच्चों को प्रत्यक्ष रूप से ऐसे स्थानों पर ले जाने का भी प्रयास करेंगे जिसे बच्चे देखकर स्वतः अनुमान लगा सकें।

शिक्षक बच्चों को स्थान विशेष से संबंधित एक कहानी सुनाएँगे–

सूखी धरती में पानी लौट आया। सिर्फ पानी ही नहीं लौटा। उसके साथ – लौट आई नंगे पहाड़ों पर हरियाली और जीवन में खुशहाली। बरसों की नदियाँ न सिर्फ सरस हो गईं, बल्कि मछलियों व अन्य छोटे–छोटे जल–जीवों की क्रीड़ा शुरू हो गई । जगह–जगह पानी का जमा होना, कुओं का फिर से चढ़ जाना और हरे–भरे होते जा रहे खेतों में पानी फेंकती मशीनें देखकर सहसा यकीन करना मुश्किल हो जाता है कि क्या यह वही धरती है जो हर साल मौसम आते ही अकाल और सूखे की चपेट में आ जाती है ।

राजस्थान की धरती पर हुई यह जल–क्रान्ति एक–दो नहीं करीब पन्द्रह सालों के कड़े संघर्ष और समाज की अथक मेहनत का नतीजा है । इस जल क्रान्ति को संभव बनाने में केन्द्रीय भूमिका राजेन्द्र सिंह की रही।

शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक संख्या एक और दो को पूर्ण करने के लिए कहेंगे तथा बच्चों को आ रही समस्याओं का समाधान भी करेंगे।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक बच्चों को आपस में एक दूसरे से चर्चा करने का अवसर प्रदान करेंगे तथा कार्य पत्रकों की जाँच करेंगे एवं बच्चों को आ रही समस्याओं का समाधान भी करेंगे ।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक संख्या तीन में दिए गए निर्देशों के अनुसार घर से पूरा करके लाने को कहेंगे।

सप्ताह– 5

दिवस–21

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे सहायक क्रिया एवं मुख्य क्रिया को अलग–अलग जानते एवं समझते हैं, बच्चे सहायक क्रिया एवं मुख्य क्रिया के प्रयोग से वाक्य रचना करते हैं।

सहायक सामग्री– सहायक क्रिया एवं मुख्य क्रिया के प्रयोग वाले वाक्य की श्रव्य–दृश्य सामग्री/चार्ट पेपर, वाक्य की पट्टियाँ आदि।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक बच्चों को एक लघुकथा सुनाएँगे–

शिखा बहुत अच्छा गाती थी। विद्यालय का कोई भी आयोजन बिना उसके गायन के पूरा नहीं हो सकता था। एक बार वह स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर गा रही थी, सभी मन्त्रमुग्ध होकर सुन रहे थे। संगीत –शिक्षिका ने कहा आगे जाकर यह एक अच्छी गायिका बन सकती है।

कथा सुनाने के बाद शिक्षक बच्चों से पूछेंगे? 'यह एक अच्छी गायिका बन सकती है' इस वाक्य में क्रिया पद क्या है? बच्चों के उत्तर सुनने के बाद शिक्षक निष्कर्ष कथन कहेंगे कि यहाँ 'बनना' क्रिया है जबकि 'सकती है' उसकी सहायक क्रिया है।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक लघुकथा से दूसरा प्रश्न करेंगे। 'सभी मन्त्रमुग्ध होकर सुन रहे थे' इस वाक्य में सहायक क्रिया और मुख्य क्रिया कौन–कौन सी है? उत्तर सुनने के क्रम

में सुगमकर्ता की भूमिका निभाते हुए शिक्षक बताएँगे कि यहाँ 'सुनना' मुख्य क्रिया है जबकि 'रहे थे' सहायक क्रिया है। अब शिक्षक उपलब्धता के आधार पर सहायक क्रिया एवं मुख्य क्रिया वाले वाक्य की श्रव्य–दृश्य सामग्री/ चार्ट पेपर कक्षा में प्रदर्शित/ प्रस्तुत करेंगे।

- वह पुस्तक पढ़ रहा होगा।
- मीरा बाजार जा रही थी।
- क्या वह दौड़ में जीत सकता है?
- तुम्हें अच्छे से पढ़ाई करनी चाहिए।

अन्त में उन्हें बताया जाएगा कि इन वाक्यों में पढ़ना, जाना, जीतना, पढ़ाई करना– ये मुख्य क्रियाएं हैं जबकि होगा, थी, सकता है, चाहिए – ये सहायक क्रियाएं हैं। सहायक क्रिया एवं मुख्य क्रिया की परिभाषा इस प्रकार हैः–

मुख्य क्रिया– किसी भी वाक्य में जिस शब्द से किसी कार्य के होने का पता चलता है उसे मुख्य क्रिया कहते हैं, जैसे– लिखना, गाना, नहाना, पढ़ना आदि।

सहायक क्रिया– जिस शब्द के द्वारा मुख्य क्रिया का अर्थ और स्पष्ट हो जाता है अथवा वह क्रिया जिसकी सहायता से मुख्य क्रिया का अर्थ बोध होने में सुगमता होती है, वह सहायक क्रिया होती है।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक कुछ वाक्य–पट्टियों को कक्षा में दिखाएंगे –

- पानी बड़े जोर से एक तरफ से दूसरी तरफ बह रहा था।
- आक के पत्ते कभी नहीं तोड़ने चाहिए।
- दुश्मनों ने अत्याधुनिक बंदूकों से गोलीबारी आरंभ कर दी।

एक वाक्य–पट्टी दिखाकर बच्चों से पढ़वाई जाएगी तथा उसमें से मुख्य क्रिया एवं सहायक क्रिया पूछी जाएगी। इसी क्रम का अनुसरण करते हुए तीनों वाक्यों पर कार्य करवाए जाएँगे।

अन्त में एक बार पुनः मुख्य क्रिया एवं सहायक क्रिया पर बच्चों की समझ को दृढ़ करते हुए कुछ अन्य उदाहरण दिए जाएँगे।

प्रदत्त कार्य– सभी बच्चों को पाठ्यपुस्तक से सहायक क्रिया एवं मुख्य क्रिया वाले पाँच–पाँच वाक्य लिखकर लाने को कहेंगे। मुख्य क्रिया एवं सहायक क्रिया की परिभाषा जो कि कक्षा में बताई गयी है, उसे पुनः लिखकर लाने को कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के दो कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 5

दिवस–22

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे समानार्थी/पर्यायवाची, शब्दों को बताते हैं और चर्चा करते हैं। वे विपरीतार्थी, अनेकार्थी शब्दों के अर्थ जानते हुए उसका प्रयोग करते हैं।

सहायक सामग्री– पर्यायवाची शब्दों वाला चार्ट पेपर, विलोम शब्दों का फ्लैश कार्ड, अनेकार्थी शब्द वाला फ्लैश कार्ड आदि।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक कक्षा में बच्चों से प्रश्न करेंगे कि सोना और जागना में क्या संबंध है। वह बच्चों के उत्तर को ध्यान से सुनेंगे। पुनः शिक्षक द्वारा एक और प्रश्न किया जाएगा–

शिक्षक– उद्यान और बगीचे में क्या संबंध है, इसका उत्तर बच्चे देंगे जिसे शिक्षक ध्यान से सुनेंगे। इन उत्तरों को समेटते हुए शिक्षक निष्कर्ष कथन कहेंगे कि सोना और जागना एक–दूसरे के विपरीत अर्थ देने वाले हैं। इन्हें विलोम शब्द कहते हैं। इसी तरह उद्यान और बगीचा दोनों का अर्थ एक ही होता है, ऐसे शब्द एक–दूसरे के पर्यायवाची या समानार्थी शब्द कहलाते हैं।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक शिक्षण के दौरान कुछ फ्लैश कार्ड बच्चों को वितरित करेंगे।

भू धरा	अम्बर नभ	दामिनी बिजली
सुगम दुर्गम	गुण अवगुण	हर्ष विषाद

सोना	पत्र	वर्ण
स्वर्ण	पत्ता	रंग
नींद में सोना	पन्ना	अक्षर

बच्चे वितरित किए गए फ्लैश कार्ड से समानार्थी/पर्यायवाची, विपरीतार्थी शब्द का अर्थ समझ जाएँगे लेकिन अनेकार्थी शब्द के अर्थ कुछ बच्चे समझ लेंगे कुछ नहीं समझेंगे।

शिक्षक बताएँगे कि जब किसी शब्द के एक से अधिक अर्थ होते हैं उन्हें अनेकार्थी शब्द कहते हैं

शिक्षक गतिविधि के लिए बच्चों को तीन समूह में बाँट कर कार्य करने के लिए कुछ फ्लैश कार्ड देंगे।

समूह एक– निम्न शब्दों का समानार्थी शब्द लिखिए–

- वसुधा ....
- पुष्प ....
- मधु ....

समूह दो– निम्न शब्दों का विपरीतार्थक शब्द लिखिए–

- सुगम– ....
- स्थूल– ....
- सरस– ....
- सहित– ....

समूह तीन– निम्न शब्दों के एक से अधिक अर्थ लिखिए–

- कुल ....
- पक्ष ....
- दल ....
- कर...

शिक्षण के अंत में–

शिक्षक तीनों समूहों के द्वारा की गयी गतिविधियों में आई कठिनाईयों का निवारण करेंगे। पाठ की समाप्ति पर शिक्षक "शब्द–संपदा" के प्रारूपों (पर्यायवाची/समानार्थी, विपरीतार्थी एवं अनेकार्थी) की क्रम से पुनः संक्षिप्त प्रस्तुति करेंगे एवं विद्यार्थियों की समझ को विकसित करेंगे।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों से पर्यायवाची, विपरीतार्थी तथा अनेकार्थी शब्दों के दो–दो उदाहरण ढूँढकर लाने को कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 5

दिवस–23

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे वचन एव लिंग की पहचान कर उनमें अंतर करते हैं।

सहायक सामग्री– शब्द कार्ड, चित्र कार्ड।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक कक्षा के वातावरण को सहज बनाने के लिए बच्चों से उनके परिवार के विषय में सामान्य प्रश्न करेंगे–

शिक्षक– आपके घर में कौन–कौन रहता है?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)

शिक्षक– कौन क्या करता है?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)

शिक्षक– अच्छा, यह बताइए कि हम घर में माता–पिता का सहयोग कैसे कर सकते हैं?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)

शिक्षक बच्चों की पसंद/नापसंद आदि बातों को भी सम्मिलित करते हुए बातचीत करेंगे और श्यामपट्ट पर कुछ वाक्य लिखेंगे–

लड़का खेलता है।	लड़के खेलते हैं।
लड़की पढ़ती है।	लड़कियाँ पढ़ती हैं।
बालक पढ़ता है।	बालिका पढ़ती है।
लड़का खेलता है।	लड़की खेलती है।

शिक्षण के मध्य में –

शिक्षक बच्चों को कहेंगे कि चलो आज हम एक खेल खेलते हैं। शिक्षक बच्चों को गोल घेरे में बैठा देंगे। उनके बीच में पहले से तैयार किए हुए शब्द कार्ड (जिसमें चित्र भी बने हों) रख देंगे। अब एक–एक बच्चे को नाम लेकर बुलाएँगे तथा कार्ड उठाने के लिए बोलेंगे। बच्चों के कार्ड उठाने पर उसमें बने चित्र पर वार्तालाप करेंगे। सभी बच्चों को मौका देंगे।

इस प्रकार शिक्षक सभी कार्डों को दिखाते हुए स्पष्ट करेंगे कि जहाँ एक व्यक्ति/वस्तु, जानवर आदि की बात की जाती है, वहाँ एकवचन होता है तथा जहाँ एक से अधिक व्यक्ति/वस्तु, जानवर आदि की बात की जाती है, वहाँ बहुवचन होता है तथा शब्द के जिस रूप से पुरुष और स्त्री जाति का बोध होता है, उसे लिंग कहते हैं।

शिक्षण के अंत में –

शिक्षक कार्यपत्रकों की जाँच करेंगे तथा जाँच के बाद जिन बच्चों को समझने में कठिनाई आ रही होगी उनका समाधान करेंगे। शिक्षक वचन और लिंग में अंतर की समझ को स्पष्ट करेंगे।

- **शब्द के जिस रूप से एक वस्तु का बोध हो उसे एकवचन कहते हैं, जैसे– लड़का, गाय, बकरी, किताब आदि।**
- **शब्द के जिस रूप एक से अधिक वस्तुओं का बोध हो उसे बहुवचन कहते हैं, जैसे– लड़के, गायें, किताबें, बकरियाँ आदि।**
- **शब्द के जिस रूप से पुरुष जाति का बोध होता है उसे पुंल्लिग कहते हैं, जैसे– बैल, बंदर, पिता आदि।**
- **शब्द के जिस रूप से स्त्री जाति का बोध होता है उसे स्त्रीलिंग कहते है, जैसे– गाय, माता, चाची, बंदरिया आदि।**

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक संख्या दो को उसमें दिए गए निर्देशों के अनुसार घर से पूर्ण करके लाने को कहेंगे ।

सप्ताह– 5

दिवस–24

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे विराम–चिह्न की पहचान कर लेते हैं तथा इसका लेखन में प्रयोग करते हैं।

सहायक सामग्री– चिह्न से युक्त फ्लैश कार्ड, विविध विराम चिह्नयुक्त अनुच्छेद का चार्ट एवं अन्य भौतिक संसाधन के अन्तर्गत आने वाली समस्त सहायक सामग्री।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक बच्चों को दो समूहों में बाँटेंगे। इसके बाद शिक्षक कुछ वाक्य श्यामपट्ट पर लिखेंगे, जैसे–

सुधा कक्षा में आ गयी है। (ठहराव)

उपर्युक्त वाक्य में शिक्षक ठहराव का तात्पर्य बच्चों को समझाएँगे और बताएँगे कि सुधा कक्षा में आ गई है अर्थात् सुधा कक्षा में उपस्थित है।

शिक्षण के मध्य

- **सुमन कक्षा में आ गयी है!** (आश्चर्य)

  इस वाक्य में शिक्षक बताएँगे कि सुमन कक्षा में आ गयी है का तात्पर्य है कि सुमन बहुत दिन से कक्षा में नहीं आ रही थी आज अचानक आ गयी है।

- **चंचला कक्षा में आ गयी है?** (प्रश्न)

  इस बात में शिक्षक यह बताएँगे कि यहाँ पर यह पूछा जा रहा है कि कक्षा में चंचला उपस्थित है या नहीं अर्थात् प्रश्न किया जा रहा है।

- **रोको मत, जाने दो।** (यहाँ जाने की अनुमति प्रदान की जा रही है)

इस वाक्य के अन्तर्गत शिक्षक यह स्पष्ट करेंगे कि रोको मत के बाद अल्प–विराम का चिह्न है अर्थात् किसी व्यक्ति विशेष को रोको मत जाने दो।

- **रोको, मत जाने दो।** (जाने की अनुमति नहीं प्रदान की जा रही है)

इस वाक्य में शिक्षक यह बताएँगे कि 'रोको' के बाद अल्प–विराम का चिह्न लगा है।

- **विवेकानंद** ने कहा है– ''हम संसार के ऋणी हैं, संसार हमारा ऋणी नहीं। संसार की सहायता करने से हम वास्तव में अपना ही कल्याण करते हैं।''

इस वाक्य के माध्यम से शिक्षक यह स्पष्ट करेंगे कि किसी के कथन को जिसे हू–ब–हू लिखा जाता है उस कथन को उद्धरण चिह्न ("") के अंदर लिखा जाता है।

इसके बाद शिक्षक बच्चों से कार्यपत्रक संख्या 1 को पूर्ण करवाएँगे।

शिक्षण के अंत में

एक बार पुनः सभी विराम–चिह्नों का अभ्यास कराते हुए उनके मूल–भाव से परिचित कराएँगे तथा साथ में कुछ सरल वाक्य देकर उनपर विराम–चिह्न लगाने के लिए कहेंगे तथा कार्यपत्रक संख्या दों को पूर्ण करवाएँगे।

सही मिलान कीजिए –

1– आश्चर्य करने के लिए	अल्पविराम (,)
2– वाक्य की समाप्ति पर	प्रश्नवाचक (?)
3– प्रश्न पूछने के लिए	विस्मयादिबोधक (!)
4– थोड़ा रुकने के लिए	उद्धरण चिह्न ("")
5– दो शब्दों को जोड़ने के लिए	योजक चिह्न (–)
6– कही गयी बात को ज्यों का त्यों बताने के लिए	पूर्ण विराम (।)

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक संख्या तीन को उसमें दिए गए निर्देशों के अनुसार घर से पूर्ण करके लाने को कहेंगे ।

सप्ताह– 5

दिवस–25

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे दिए गए शीर्षक पर निबंध लिखते हैं।

सहायक सामग्री– फ्लैश–कार्ड (जिस शीर्षक पर निबंध लिखना हो उन्हें फ्लैश कार्ड पर लिख दें)

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक बच्चों को बताएँगे कि निबंध गद्‌य लेखन की विधा है। अच्छा निबंध लिखने के लिए सरल और स्पष्ट भाषा का प्रयोग करना चाहिए। शब्द सीमा का ध्यान रखने के साथ ही साथ विचारों की पुनरावृत्ति से भी बचना चाहिए। वर्तनी शुद्ध होनी चाहिए तथा विराम चिह्नों का उचित प्रयोग होना चाहिए।

निबंध के मुख्यतः तीन भाग होते हैं–

- प्रस्तावना
- विषय प्रतिपादन (मध्य भाग)
- उपसंहार

शिक्षण के मध्य

प्रस्तावना– इसमें निबंध के विषय का सार संक्षेप में लिखा जाता है। विषय का परिचय भी दिया जाता है ताकि पाठक निबंध की विषयवस्तु को समझने के लिए स्वयं को तैयार कर सकें।

विषय प्रतिपादन– निबंध लिखने का उद्देश्य किसी विषयवस्तु को तर्क और तथ्यों के ढाँचे में फिट करके उसे व्यवस्थित रुप देना है ताकि उस विषय वस्तु को और अधिक गहराई से समझा जा सके। इसीलिए विषयवस्तु की पूर्ण जानकारी पहले

से कर लेना और उसे भली–भाँति परख लेना चाहिए, फिर उसे निबंध में लिखना चाहिए। यह निबंध का मुख्य भाग होता है।

उपसंहार– इसमें समस्त निबंध का सार होता है। यह स्वाभाविक, संक्षिप्त और संगत होना चाहिए।

निबंध तीन प्रकार के हो सकते हैं–

- **भावनात्मक निबंध**
- **विचारात्मक निबंध**
- **वर्णनात्मक निबंध**

शिक्षण के अंत में

शिक्षक बच्चों को फ्लैश कार्ड पर लिखे कुछ शीर्षक देंगे जिस पर बच्चे निबंध लिखेंगे। फ्लैश कार्ड बच्चों द्वारा उठाए जाएँगे उस पर लिखे शीर्षक पर बच्चे निबंध लिखेंगे–

- राष्ट्रीय एकता
- बेरोजगारी की समस्या
- शिक्षा का महत्व

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक में दिए गए निर्देशों के अनुसार घर से पूरा करके लाने को कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 6

दिवस–26

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे उपसर्ग और प्रत्यय की समझ रखते हैं। उपसर्ग और प्रत्यय लगाकर नये शब्दों का निर्माण करते हैं।

सहायक सामग्री– उपसर्ग और प्रत्यय के फ्लैश कार्ड और उपसर्ग से जुड़े कुछ शब्दों के चार्ट पेपर आदि।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक कुछ शब्द श्यामपट्ट पर लिखेंगे–

(क)	(ख)
मान	अपमान (अप + मान)
हार	उपहार (उप + हार)
जन	निर्जन (निर् + जन)
फल	सफल (स + फल)
रस	नीरस (नी + रस)

शिक्षक श्यामपट्ट पर लिखे गए शब्दों के माध्यम से बच्चों को स्पष्ट करेंगे कि वर्ग 'क' के शब्द मूल शब्द हैं। वर्ग 'ख' के शब्दों में कुछ शब्दांश जोड़कर नए शब्द बनाए गए हैं। ये शब्दांश मूल शब्दों के पहले जोड़े गए हैं। इनके जोड़ने से शब्दों के अर्थ में परिवर्तन आ गया है। इस प्रकार से शिक्षक उपसर्ग की परिभाषा स्पष्ट करेंगे–

वे शब्दांश जो किसी मूल शब्द के आरम्भ में जुड़कर नये शब्द बनाते हैं, उपसर्ग कहे जाते हैं।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक श्यामपट्ट पर कुछ उपसर्ग लिखेंगे और उपसर्ग लगाकर नए शब्द बनाने का अभ्यास कराएँगे–

अ– अचर, अमर, अजर, अधर्म

अन– अनादर, अनावश्यक, अनर्थ

अति– अत्यधिक, अत्याचार, अतिशय

अभि– अभिमान, अभिशाप, अभिमत,

शिक्षक बच्चों से उपसर्ग का अभ्यास कराने के बाद प्रत्यय का अभ्यास कराएँगे।

प्रत्यय के संदर्भ में– शिक्षक श्यामपट्ट पर कुछ शब्द लिखेंगे और बच्चों को उन शब्दों को समझते हुए पढ़ने को निर्देशित करेंगे, जैसे–

(क) सुंदरता, कठोरता, सरलता, राष्ट्रीयता

(ख) नेतृत्व, पशुत्व, अपनत्व, कवित्व

(ग) धनवान, गुणवान, ज्ञानवान, गाड़ीवान

(घ) मालिन, धोबिन, सुनारिन, कुम्हारिन

शिक्षक श्यामपट्ट पर लिखे शब्दों की तरफ ध्यान आकृष्ट कराते हुए स्पष्ट करेंगे कि 'क' वर्ग के सभी शब्दों में 'ता', 'ख' वर्ग के सभी शब्दों में 'त्व', 'ग' वर्ग के सभी शब्दों में 'वान' और 'घ' वर्ग के सभी शब्दों में 'इन' का प्रयोग किया गया है। ता, त्व, वान, तथा इन; ये सभी प्रत्यय हैं जिन्हें शब्दों के अंत में जोड़कर नए शब्द बनाए गए हैं।

जो शब्दांश किसी शब्द अथवा धातु के अंत में जुड़कर नए शब्दों का निर्माण करते हैं उन्हें प्रत्यय कहते हैं।

शिक्षक श्यामपट्ट पर कुछ प्रत्यय लिखेंगे और बच्चों को प्रत्यय लगाकर नए शब्द बनाने को कहेंगे।

प्रत्यय	मूल शब्द	नए शब्द
आई	लड़, पढ़, लिख	लड़ाई, पढ़ाई, लिखाई
आन	उड़, लग, चौह	उड़ान, लगान, चौहान
आवट	लिख, बन, मिल	लिखावट, बनावट, मिलावट
ईय	पठन, जल, आकाश	पठनीय, जलीय, आकाशीय

शिक्षण के अंत में

शिक्षक श्यामपट्ट पर लिखे शब्दों से बने उपसर्ग और प्रत्यय की जाँच करते हुए बच्चों को अपनी कॉपी में लिखने को कहेंगे।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक में दिए गए निर्देशों के अनुसार घर से पूरा करके लाने को कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 6

दिवस–27

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे विशिष्ट शब्दों मुहावरों, लोकोक्तियों का प्रयोग बोलचाल की भाषा में करते हैं।

सहायक सामग्री– बड़े चार्ट पर लिखे हुए कुछ मुहावरे एवं कुछ लोकोक्तियाँ, संबंधित फ्लैश कार्ड।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षण के प्रारंभ में शिक्षक एक छोटा अनुच्छेद श्यामपट्ट पर लिखेंगे। उसमें आए हुए मुहावरे एवं लोकोक्ति को रेखांकित करते जाएँगे ।

प्रतीक को कुछ आता जाता नहीं लेकिन जब होता है तभी वह बोल पड़ता है। "हम बताएं", "हम बताएं"। लोग उसको हमेशा कहते हैं– **अधजल गगरी छलकत जाय**। वास्तव में बात यह है कि अपने मुहल्ले में वह **अंधों में काना राजा** है, क्योंकि वही एक थोड़ा पढ़ा–लिखा है ।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक बच्चों से प्रश्न करेंगे –

शिक्षक– रेखांकित वाक्य को क्या कहते हैं ?

बच्चे– ...(सम्भावित उत्तर)

शिक्षक– 'अंधों में काना राजा' मुहावरा है, लेकिन 'अधजल गगरी छलकत जाय' यह लोकोक्ति है ।

लोकोक्ति:– लोक में प्रचलित उक्ति को लोकोक्ति कहते हैं, जिसे अपने कथन की पुष्टि के लिए प्रस्तुत किया जाता है, जैसे–
1– दूध का दूध पानी का पानी। 2–सच और झूठ का ठीक फैसला ।

मुहावरा :– जब कोई वाक्यांश अपने सामान्य अर्थ को छोड़कर किसी विशेष अर्थ में रूढ़ हो जाता है, उसे मुहावरा कहते हैं, जैसे– मुहावरे में गाँठ बाँधना का अर्थ गाँठ बाँधना नहीं बल्कि किसी चीज को याद रखने के अर्थ में प्रयुक्त होता है ।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक मुहावरे, लोकोक्तियाँ बच्चों के द्वारा अलग–अलग लिखने के बाद उनका अर्थ बताएँगे तथा उसका अर्थ बताते हुए वाक्य प्रयोग कर बच्चों को श्यामपट्ट पर लिखकर दिखाएँगे।

लोकोक्ति–

जैसे– **अंधी पीसे कुत्ता खाये**।

अर्थ– बेवकूफ व्यक्ति की मेहनत का कोई दूसरा व्यक्ति फायदा उठाता है।

वाक्य प्रयोग– कौआ मेहनत करके घोसला बनाता और उसके घोसले में कोयल अण्डे देती है। इसे कहते हैं अंधी पीसे कुत्ता खाये।

मुहावरा–

जैसे– **चिकना घड़ा होना**।

अर्थ– कुछ असर न पड़ना।

वाक्य प्रयोग– मोहन को कितना भी कह लो लेकिन वह चिकना घड़ा है । उस पर किसी भी बात का कोई असर नहीं होता है ।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक में दिए गए निर्देशों के अनुसार घर से पूरा करके लाने को कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 6

दिवस–28

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे विविध कलाओं यथा हस्तकला, वास्तुकला, नृत्यकला, खेती–बारी आदि में प्रयोग होने वाली भाषा के बारे में जिज्ञासा व्यक्त करते हैं और उनके विषय में बताते हैं।

सहायक सामग्री– हस्तकला, वास्तुकला, नृत्यकला, खेती–बारी का चित्र।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में–

शिक्षक बच्चों से बातचीत करते हुए गोले में बैठाएँगे तथा एक बच्चे को बुलाकर निम्नलिखित शब्द बोलने को कहेंगे, बाकी बच्चे कॉपी में लिखेंगे –

दुरन्त, कुरुक्षेत्र, चिकित्सक, ढिबरी, खुरपी, उपकरण

शिक्षक उनका अवलोकन करेंगे तथा उच्चारण की शुद्धता लिखे गए शब्द से परखेंगे।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक बच्चों के चार से पाँच समूह बनवाएँगे। प्रत्येक समूह से एक बच्चे को दिए गए शब्द बोलने को कहेंगे तथा समूह के बाकी बच्चों से उसे कॉपी में लिखने को कहेंगे। शिक्षक बच्चों के लिखे गए शब्दों को देखकर जाँचेंगे कि बोले गए शब्द का उच्चारण सही था या नहीं। यदि अधिकतर शब्द सही लिखे गए हैं तो स्पष्ट है कि उच्चारण शुद्ध और स्पष्ट था ।

(यह गतिविधि बार–बार और अलग–अलग समूह में कराएँगे।)

बच्चों को बोलने के लिए दिए जाने वाले शब्द निम्नलिखित हैं–

कत्थक, इन्द्रधनुष, ताज्जुब, अत्यधिक, फावड़ा, वसुधा।

शिक्षक बच्चों को दिए गए शीर्षक पर लगभग 50 शब्दों का एक अनुच्छेद लिखने को कहेंगे तथा उसे बच्चों के सामने पढ़ने को कहेंगे। शिक्षक पढ़ते समय ध्यानपूर्वक सुनेंगे तथा उच्चारण की शुद्धता को देखेंगे जहाँ आवश्यक हो वहाँ बताएँगे तथा पुनः उच्चारण करवाएँगे। कक्षा के बच्चों से भी कहें कि वे ध्यान से सुनें तथा गलत उच्चारण वाले शब्दों पर हाथ उठाकर बताएँ।

अनुच्छेद लेखन के शीर्षक निम्नलिखित हो सकते हैं–

- नृत्य के प्रकार (भरतनाट्यम, कत्थक, लोकनृत्य)
- हस्तकला
- खेती–बारी
- गंगा नदी
- आपके क्षेत्र का प्रसिद्ध मेला
- पेड़–पौधों की उपयोगिता

शिक्षण के अंत में

शिक्षक बच्चों को समूह में बाँटेंगे। अब प्रत्येक समूह को एक शब्द देकर बारी–बारी से गतिविधि करने को कहेंगे। शिक्षक जहाँ आवश्यकता हो बच्चों की सहायता करेंगे एवं उच्चारण किये गए शब्दों पर ध्यान देंगे।)

बोलने के लिए दिए जाने वाले शब्द–

बुदबुदाना	फुसफुसाना	भुनभुनाना
मिमियाना	टिमटिमाना	गुनगुनाना

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक में दिए गए निर्देशों के अनुसार घर से पूरा करके लाने को कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 6

दिवस–29

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे दी गई कहानी को पढ़ते हुए उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर देते हैं।

सहायक सामग्री– कहानी से संबंधित चित्र/पोस्टर।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक बच्चों को निर्देश देते हैं कि उनके द्वारा एक कहानी पढ़कर सुनाई जाएगी, जिसे सभी बच्चे ध्यानपूर्वक सुनेंगे, और कहानी के दौरान तथा उसके बाद आपसे कुछ प्रश्न किए जाएँगे, जिनका उत्तर आपको देना है।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक बच्चों को चार मित्र और एक शिकारी की कहानी सुनाएँगे।

जंगल में हिरन, कौआ, कछुआ और चूहे की गाढ़ी मित्रता थी। एक बार जंगल में शिकारी आया और उसने एक हिरन को अपने जाल में फँसा लिया।

अब बेचारा हिरन असहाय सा जाल में फँसा था। उसे लगा कि आज मेरी मृत्यु निश्चित है। इस डर से वह घबराने लगा। तभी उसके मित्र कौए ने यह सब देखा और उसने कछुए और चूहे को भी हिरन की सहायता के लिए बुला लिया। कौए ने जाल में फँसे हिरन पर इस तरह चोंच मारना शुरू कर दिया जैसे कौए किसी मृत जानवर की लाश को नोंच कर खाते हैं। अब शिकारी को लगा कि कहीं यह हिरन मर तो नहीं गया। तभी कछुआ उसके आगे से गुजरा। शिकारी ने सोचा हिरन तो गया इस कछुए को ही पकड़ लेता हूँ। यही सोचकर वह कछुए के पीछे–पीछे चल दिया।

इधर मौका पाते ही चूहे ने हिरन का सारा जाल काट डाला और उसे आजाद कर दिया। शिकारी कछुए के पीछे–पीछे जा ही रहा था कि तभी कौआ उड़ता हुआ आया और कछुए को अपनी चोंच में दबाकर उड़ा ले गया। इस तरह सभी मित्रों ने मिलकर एक दूसरे की जान बचाई।

शिक्षक– कहानी में कौन–कौन और कितने मित्र हैं?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षक– शिकारी ने अपने जाल में किसे फँसा लिया?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षक– हिरन को किसने आजाद कराया?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षक– इस कहानी से आपको क्या शिक्षा मिलती है?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षक कहानी की शिक्षा पर चर्चा करेंगे और बताएँगे कि किसी भी कठिन समस्या के समाधान के लिए मिलकर कार्य करने से कठिन से कठिन कार्य भी आसान हो जाता है।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक कक्षा को चार समूहों में बाँट देंगे। प्रत्येक समूह को एक–एक काल्पनिक समस्या देंगे और साथ मिलकर कार्य करने के लिए बच्चों से कहेंगे। दी गई परिस्थिति पर बच्चे अपने–अपने समूह में चर्चा करें कि इस स्थिति में वे क्या करेंगे। चर्चा के बाद प्रत्येक समूह अपने विचार कक्षा में रखेगा।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक में दिए गए निर्देशों के अनुसार घर से पूरा करके लाने को कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 6

दिवस–30

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे स्तरानुकूल कविता को अपने शब्दों में लिखते हैं।

सहायक सामग्री– कविता से संबंधित चित्र, पोस्टर, विडियो–क्लिप आदि।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक बच्चों को निर्देश देते हैं कि उनके द्वारा आदर्श पाठ की गई कविता को बच्चे ध्यानपूर्वक सस्वर पाठ कर अपने शब्दों में भावार्थ बताएँगे।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक कविता का पूरे हाव–भाव के साथ आदर्श पाठ कर उसकी व्याख्या करेंगे तथा बच्चों को उसका सस्वर पाठ करने का निर्देश देंगे।

वीरों का कैसा हो वसंत ?
आ रही हिमाँचल से पुकार,
है उदधि गरजता बार–बार,
प्राची, पश्चिम, भू, नभ अपार
सब पूछ रहे हैं दिग–दिगन्त,
वीरों का कैसा हो वसंत ?
फूली सरसों ने दिया रंग,
मधु लेकर आ पहुँचा अनंग,
वसु–वसुधा पुलकित अंग–अंग,
हैं वीर वेश में किन्तु कंत,
वीरों का कैसा हो वसंत ?

शिक्षक– वीरों का कैसा हो वसंत ? यह प्रश्न कविता में कौन–कौन पूछ रहा है?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)

शिक्षक– सेना के तीन अंग हैं– थल सेना, वायु सेना, जल सेना। सैनिक के रूप में आप सेना के किस अंग में भाग लेना चाहेंगे और क्यों ?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)

शिक्षण के अंत में

शिक्षक कविता में वसंत के माध्यम से वीरों के पराक्रम का वर्णन करेंगे। साथ ही देश की सुरक्षा में वीर सैनिक प्रहरी की तरह होते हैं, के माध्यम से सैनिकों के महत्त्व को भी बताएँगे।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक कक्षा में बच्चों को स्वनिर्मित गीत, कविता घर से लिख कर लाने के लिए कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के चार कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 7

दिवस–31

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे हिन्दी शब्दकोश में शब्दो के अर्थ खोज लेते हैं।

सहायक सामग्री– शब्दकोश, कठिन शब्दों की एक सूची।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक बच्चों को एक दोहा सुनाएँगे–

यह तन विष की बेलरी, गुरू अमृत की खान।
शीश दिये जो गुरु मिले, तो भी सस्ता जान।।

शिक्षक बच्चों से प्रश्न करेंगे कि दिए गए दोहे में किन–किन शब्दों के अर्थ उन्हें पता है। शिक्षक बच्चों के संभावित उत्तरों को श्यामपट्ट पर लिखते जाएँगे और जिन शब्दो के अर्थ समझने में कठिनाई आ रही है उनके अर्थ शब्दकोश के प्रयोग से पता करने को कहेंगे।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक बच्चों को बताएँगे कि शब्दों के सही अर्थ को जानने के लिए शब्दकोश का प्रयोग किया जाता है। शब्दकोश को अंग्रेजी में Dictionary (डिक्शनरी) कहते हैं। इसकी सहायता सें शब्दों के अर्थ को समझना तथा सही अर्थ को जानने में सहायता मिलती है।

शिक्षक बच्चों को शब्दकोश दिखाते हुए यह बताएँगे कि इसमें प्रत्येक स्वर तथा व्यंजन से प्रारम्भ होने वाले शब्द समाहित हैं। शिक्षक शब्दकोश में शब्दो को खोजने के सही क्रम बच्चों को परिचित कराते हुए जानकारी देंगे कि

शब्दकोश में अक्षरों का क्रम वहीं रखा गया है जो देवनागरी वर्णमाला का है अर्थात्–

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ,
ए, ऐ, ओ, औ,
क, ख, ग, घ,
च, छ, ज, झ,
ट, ठ, ड, ढ,
त, थ, द, ध, न,
प, फ, ब, भ, म,
य, र, ल, व, श, ष
स, ह इत्यादि है।

टिप्पणी 1– अं/अँ, अः को अलग अक्षर नहीं माना गया है ये ध्वनियाँ अ के साथ ही मानी जाती है, इसलिए इन ध्वनियों से संबंधित शब्द अ से पूर्व अथवा अ से लगे हुए होते हैं।

2– ङ, ण से कोई शब्द नहीं आरम्भ होते ।

3– मात्राओं के बाद संयुक्त अक्षर अपने क्रम में होंगे, जैसे–

क्क, क्ख, क्च, क्थ, क्म, क्म, क्रः क्ल, क्व, क्श

शिक्षक बच्चों को यह भी बताएँगे कि क्ष, त्र, ज्ञ संयुक्त अक्षर हैं अतः क्ष को क से साथ रखा जाता है, त्र को त के साथ और ज्ञ को ज के साथ रखा जाता है।

जिन शब्दों के अर्थ एक से अधिक होते हैं उनके अर्थों को 1,2,3,4 संख्या देकर लिखा जाता है। शिक्षक संबंधित कार्यपत्रकों पर कार्य करवाएँगे।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक बच्चों के मध्य रखे शब्दकोश से कुछ शब्द खोजने को कहेंगे जैसे– अटूट, उपकार, अंशुमान, आँख, कटोरी, खखरा इत्यादि। जिन बच्चों को शब्द खोजने मे समस्या आ रही होगी उनका सहयोग करेंगे तथा शब्दों को खोजने की विधि को दुहराएँगे। साथ ही बच्चों द्वारा किये गये कार्यपत्रको की जाँच करेंगे।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कुछ संयुक्ताक्षर वाले शब्दों को घर से लिख कर लाने के लिए कहेंगे तथा उन शब्दों को विद्यालय में शब्दकोश के माध्यम खोजने में मदद करेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 7

दिवस–32

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे यात्रा संबंधी जानकारी प्राप्त करते हैं और विभिन्न प्रकार के टिकट की पहचान करके टिकटों पर लिखी जानकारी से अवगत हो जाते हैं।

सहायक सामग्री– चित्र कार्ड (बस, रेल, हवाई जहाज, बैलगाड़ी)

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक बच्चों से सामान्य बातचीत करेंगे । बच्चों को बस, रेलगाड़ी, हवाई जहाज, बैलगाड़ी आदि का चित्र दिखाकर बच्चों से प्रश्न करेंगे–

- यह क्या है ?
- इससे होने वाले लाभ पर चर्चा करेंगे। इन सब साधनों का उपयोग कब करते हैं? और क्यों करते हैं ?

शिक्षण के मध्य

शिक्षक यात्रा–वृत्तांत (कार्यपत्रक एक) को बताएँगे, बच्चे ध्यानपूर्वक सुनेंगे। यात्रा के बारे में विस्तार से बताएँगे ।

गतिविधि–

शिक्षक बच्चों को गोल घेरे में बैठाकर उनसे उनकी यात्रा के बारे में बातचीत करेंगे जैसे–

- आपकी नानी का घर कहाँ है ?
- आप कहाँ–कहाँ घूमना पसन्द करते हैं ?
- आपको कौन–कौन सा स्थान देखना अच्छा लगता है?

शिक्षक बच्चों को एक–एक करके बुलाएँगे और उनसे उनकी रुचि का स्थान पूछेंगे।

- आपको पहाड़ देखना पसन्द है या नदियाँ ?
- आपको किस वाहन से यात्रा करने का मन करता है– बस, रेलगाड़ी, हवाई जहाज?
- बच्चे अपनी पसंदीदा जगह एवं पसंदीदा साधन के बारे में बताएँगे ।

गतिविधि के बाद शिक्षक बच्चों से कुछ प्रश्न करेंगे ।

- सबसे जल्दी हम किस साधन से पहुँच सकते हैं?
- हवाई जहाज से यात्रा करने का मौका मिले तो आप कहाँ घूमना चाहेंगे?
- बच्चों को कार्यपत्रक संख्या एक और दो पूरा करने को कहा जायेगा।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक बच्चों से कहेंगे कि आप अपनी गर्मी की छुट्टियों में जहाँ भी घूमने गए हों, उस यात्रा का वर्णन अपनी कॉपी में लिखिए (कम से कम दो सौ शब्द)।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक में दिए गए निर्देशों के अनुसार घर से पूरा करके लाने को कहेंगे।

(**नोट**– बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 7

दिवस–33

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे यात्रा के वृतान्त को प्रस्तुत करते हैं।

सहायक सामग्री– कुछ चित्र (पहाड़, होटल, तालाब, झरना, नदी, यातायात के साधन), ICT वीडियो।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक बच्चों से बातचीत करेंगे।

- शिक्षक बच्चों से उनके घर से बाजार जाने तक के साधन के बारे पूछेंगे।
- यातायात के कौन–कौन से साधन आपके पास हैं ?
- उस साधन के नाम बताइए जो आपको नाना के घर तक ले जाते हैं ?
- किसी एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने में जो–जो घटना मार्ग में घटती है या दृश्य हम देखते हैं उनको अपने शब्दों में लिखना/कहा जाना यात्रा वृत्तांत कहलाता है।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक यात्रा के बारे में बताएँगे –

जब हमें किसी स्थान तक जाना होता है तो वहाँ तक पहुंचने के लिए हम विभिन्न साधनों का प्रयोग करते हैं , जैसे– यात्रा पैदल, साइकिल, विमान, नाव, जलयान, बस, हवाई जहाज, पैदल या अन्य साधन से की जाती है।

- शिक्षण कार्यपत्रक संख्या एक के यात्रा वृत्तांत का वर्णन करेंगे ।

- शिक्षक उपरोक्त अभ्यास पत्र में होने वाली घटनाओं के बारे में बच्चों को बताएँगे ।
- शिक्षक कार्यपत्रक के यात्रा वृत्तांत से बच्चों को उनके आस–होने वाली घटनाओं से जोड़ेंगे।
- शिक्षक बच्चों से कक्षा–कक्ष में कार्यपत्रक संख्या दो एवं उनके आस–पास प्रसिद्ध पर्यटक स्थल/धार्मिक स्थल के भ्रमण अपने शब्दों में कहने/लिखने के लिए कहेंगे।

शिक्षण के अंत में

1. शिक्षक पर्यटन के महत्व पर चर्चा करेंगे ।
2. यात्रा से होने वाले लाभ के बारे में चर्चा करेंगे।

प्रदत्त कार्यः– इन दोनों प्रश्नों के उत्तर बच्चे घर से लिखकर ले आएँगे।

1. आप छुट्टियों में घूमने कहाँ–कहाँ जाते हैं ? उन स्थानों के नाम लिखिए?
2. आपको कहाँ जाना अच्छा लगता है? यदि आप वहाँ गए हों तो उसका वर्णन अपने शब्दों में लिखिए।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 7

दिवस–34

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– उपयुक्त शब्द, मुहावरा/लोकोक्ति का प्रयोग कर कहानी लिखते हैं।

आवश्यक सामग्री– मुहावरा/लोकोक्ति लिखा हुआ चार्ट।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक बच्चों को एक लघु कहानी सुनाकर उसमें आए महत्त्वपूर्ण शब्दों, लोकोक्तियों/मुहावरों पर चर्चा करेंगे तथा स्पष्ट करेंगे कि इनका प्रयोग किस प्रकार उपयोगी है, जैसे–

बाबा जी मनुष्य ही थे। अपनी वस्तु की प्रशंसा दूसरे के मुख से सुनने के लिए उनका हृदय अधीर हो गया। घोड़े को खोलकर बाहर गए। घोड़ा वायुवेग से उड़ने लगा। उसकी चाल देखकर खड्ग सिंह के हृदय पर साँप लोट गया। वह डाकू था और जो वस्तु उसे पसन्द आ जाय उस पर वह अपना अधिकार समझता था।

शिक्षण के मध्य

उपरोक्त गद्यांश में आये मुहावरे **हृदय पर साँप लोटना, हृदय अधीर होना** पर चर्चा की जाएगी।

शिक्षक बच्चों को बताएँगे कि मुहावरों का प्रयोग किस प्रकार से गद्यांश को रोचक बनाता है। ऐसी चर्चा में शिक्षक अपने विवेकानुसार अन्य बिन्दु भी समाहित कर सकते हैं। चर्चा के उपरान्त शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक संख्या एक पूर्ण करने के लिए कहेंगे।

शिक्षक बच्चों को निम्नलिखित मुहावरों का प्रयोग करते हुए एक लघु कहानी का निर्माण करने के लिए कहेंगे–

- आँखों में चमक होना
- दिल टूट जाना
- लट्टू होना

शिक्षक बच्चों को छोटे–छोटे समूहों में विभाजित कर प्रत्येक समूह को अपने सदस्यों से विचार विमर्श कर कार्यपत्रक संख्या 2 पर कहानी लिखने के लिए कहेंगे। कार्यपत्रक पूर्ण होने के बाद प्रत्येक समूह को कहानी का प्रस्तुतीकरण करने हेतु अवसर दिया जाएगा। इसके बाद बच्चों को दूसरा कार्यपत्रक दिया जायेगा।

शिक्षक बच्चों को निम्नलिखित लोकोक्तियों का प्रयोग करते हुए संक्षिप्त नाटक लिखने को कहेंगे–

- का वर्षा जब कृषि सुखाने
- अक्ल बड़ी या भैंस।

शिक्षण के अंत में

उपरोक्त कार्य पूर्ण होने के बाद शिक्षक प्रत्येक समूह को प्रस्तुतीकरण का अवसर प्रदान करेंगे।

शिक्षक बच्चों को बताएँगे कि हम लोगों ने आज मुहावरों व लोकोक्तियों का प्रयोग कर कहानी व नाटक लिखने का प्रयास किया, साथ ही यह भी देखा कि किस प्रकार इनके प्रयोग से कहानी/नाटक में रोचकता बढ़ जाती है।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक संख्या तीन में दिए गए निर्देशों के अनुसार घर से पूरा करके लाने को कहेंगे

सप्ताह– 7

दिवस–35

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे औपचारिक पत्र–लेखन करते हैं।

सहायक सामग्री– संचार के साधनों का फ्लैश कार्ड, शादी कार्ड, पोस्टकार्ड, कार्यपत्रक।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक वार्ता के क्रम में बच्चों से संचार के साधनों के विषय में जानकारी प्राप्त करेंगे। वह यह जानेंगे कि–

शिक्षक– संचार के विभिन्न साधनों के नाम बताइए।

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)

शिक्षक– कौन–से संचार के साधन का प्रयोग वर्तमान समय में न के बराबर होता है ?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)

शिक्षक बच्चों को बताएँगे कि आज भी कोई सरकारी कार्य या व्यावसायिक कार्य बिना पत्र लिखे संभव नहीं है।

अतः बच्चों को किसी कार्य को करवाने के लिए किस–प्रकार से पत्र लिखा जाए, बताया जाएगा।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक बच्चों को बताएँगे कि व्यापारियों, पुस्तक विक्रेता, ग्राहक, प्रधानाचार्य, पदाधिकारियों, सम्पादक आदि को लिखे गए पत्र औपचारिक पत्र कहलाते हैं। इन पत्रों का उपयोग औपचारिक संचार के लिए किया जाता है। एक निश्चित औपचारिकता और निर्धारित प्रारूप का पालन करने वाले पत्र को औपचारिक पत्र

कहते हैं। इस प्रकार के पत्र में हमेशा कार्यालय के दिशा–निर्देशों और औपचारिकताओं का कड़ाई से पालन करना पड़ता है ।

शिक्षक द्वारा औपचारिक पत्र के विषय में बच्चों से पत्र किन–किन विषयों पर लिखा जा सकता है ? बताया जाएगा।

शिक्षक द्वारा प्रार्थना–पत्र, शिकायती–पत्र, व्यावसायिक–पत्र, सरकारी–पत्र आदि की रूपरेखा छात्रों को बताई जाएगी। बच्चे कार्यपत्रक संख्या एक पढ़ने के बाद अपने विचारों से उसके प्रश्नों के उत्तर देंगे।

कार्यपत्रक संख्या एक के बाद कार्यपत्रक संख्या दो में दिए गए निर्देशों के अनुसार बच्चों से लिखने के लिए कहा जाएगा। शिक्षक बच्चों का वांछित सहयोग करेंगे।

शिक्षण के अंत में

कार्यपत्रक संख्या एक और दो को पूरा करने के बाद शिक्षक बच्चों को उनके द्वारा किए गए कार्यों को प्रस्तुत करने के लिए कुछ समय देंगे। लिखे गए पत्रों की रूपरेखा व विषयवस्तु के लिए शिक्षक बच्चों को पुनर्बलित करेंगे।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक में दिए गए निर्देशों के अनुसार घर से पूरा करके लाने का कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 8

दिवस–36

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– दिए गए विषय के आधार पर अनौपचारिक पत्र का लेखन करते हैं। बच्चे अनौपचारिक पत्र लेखन में समर्थ होते हैं।

सहायक सामग्री– पत्र, समाचारपत्र, कार्यपत्रक ।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक बच्चों से वार्ता करेंगे कि आपने कौन–कौन सी पत्रिकाएं पढ़ी हैं? बच्चे भिन्न–भिन्न उत्तर देंगे । शिक्षक बच्चों से प्रश्न करेंगे कि–

- क्या वे प्रतिदिन विद्यालय आते हैं?
- यदि कभी आपका स्वास्थ्य खराब हो और आप आने में असमर्थ हों तो आप अवकाश लेने के लिए कौन–सा पत्र लिखते हैं?

  बच्चों के उत्तर– प्रार्थना–पत्र
- प्रार्थना–पत्रों के आलावा कौन से पत्र होते हैं तथा उनको किस प्रकार से लिखा जाता है?

शिक्षण के मध्य

हम लोगों ने औपचारिक पत्रों के विषय चर्चा की थी और औपचारिक पत्रों का निर्माण करना सीखा था। आज हम लोग अनौपचारिक पत्रों के बारे में चर्चा करेंगे। इन पत्रों के अन्तर्गत उन पत्रों को सम्मिलित किया जाता है जो अपने प्रियजनों को, मित्रों को तथा सगे–संबंधियो को लिखे जाते हैं ।

- कार्यपत्रक की सहायता से छात्रों को अनौपचारिक पत्र से परिचित करवाया जायेगा।

- अनौपचारिक पत्रों को लिखते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?
- इनका प्रारूप क्या होना चाहिए ? आदि बातों पर चर्चा की जाएगी।

कार्यपत्रक देकर बच्चों को अनौपचारिक पत्र लिखने के लिए कहा जाएगा और कार्यपत्रक को पूरा करने के लिए कहा जाएगा ।

शिक्षण के अंत में

अंत में शिक्षक छात्रों को कार्यपत्रक संख्या एक एवं कार्यपत्रक संख्या दो पर अपने विचार व्यक्त करने के लिए कुछ समय देंगे और बच्चों के विचारों को ध्यान से सुनेंगे एवं उनको यथोचित पुर्नबलन प्रदान करेंगे ।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक में दिए गए निर्देशों के अनुसार घर से पूरा करके लाने को कहेंगे।

(**नोट**– बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 8

दिवस–37

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे संवादात्मक वाक्यों के माध्यम से अभिनय करने में समर्थ होते हैं।

सहायक सामग्री– मुखौटा, कौआ, तोता, बिल्ली, कुत्ता इत्यादि। बच्चों के परिवेश से संबंधित कुछ चित्र या पोस्टर ।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक बच्चों को उनकी दिनचर्या के बारे में एक–दूसरे से बात करने का अवसर दें। बच्चों को दो समूहों में बाँट दें। तत्पश्चात् दोनों समूहों से एक–एक बच्चे को खड़ा करके उनकी रुचियों के विषय में बात करने को कहें। आवश्यकता पड़ने पर बच्चों का यथासम्भव सहयोग करें।

शिक्षण के मध्य

बच्चों के बीच चल रहे संवाद को शिक्षक ध्यानपूर्वक सुनेंगे तथा वार्तालाप के क्रम में आये अभिवादन हेतु, संवेदना हेतु तथा समस्या समाधान हेतु प्रयुक्त शब्दों को श्यामपट्ट पर लिखेंगे तथा उपयुक्त शब्दों के प्रयोग पर बल देंगे। बच्चों को अपने से छोटे तथा अपने से बड़े एवं समान वय–वर्ग के बच्चों के साथ सम्मानजनक शब्द प्रयोग करने हेतु प्रेरित करेंगे। इतना ही नहीं बल्कि सभी प्रकार के जीव–जन्तुओं को संरक्षण–प्रदान करें। इसी क्रम में यह भी संदेश देंगे कि किसी भी व्यक्ति के साथ रंग भेद, धर्म भेद तथा किसी प्रकार की शारीरिक अक्षमता होने पर उसके साथ दुर्व्यवहार न करें। संबंधित कार्यपत्रक में दिए गए संवाद को कक्षा के बच्चों द्वारा अभिनय करवाएँगे। कार्यपत्रकों में दिए गए कार्यों को भी पूरा

करवाएँगे। वनों की आवश्यकता तथा उपयोगिता को बताएँगे तथा वन संरक्षण तथा वृक्षारोपण हेतु प्रेरित करेंगे।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक बच्चों द्वारा किये कार्यों का अवलोकन करेंगे तथा कार्यपत्रकों की जाँच करेंगे। जिन बच्चों को समस्या आ रही हो, आवश्यकतानुसार शिक्षक उसका समाधान करेंगे। कार्यपत्रक में दिए गए संवाद पर बच्चों से मुखौटे का प्रयोग करते हुए अभिनय भी करवाएँगे। मूल बातों तथा संदेशों को पुनः दुहराते हुए सत्र का समापन करेंगे।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक में दिए गए निर्देशों के अनुसार घर से पूरा करके लाने को कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 8

दिवस–38

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– विभिन्न प्रकार की श्रव्य–दृश्य सामग्री तथा संचार माध्यमों द्वारा सुनी या देखी गई विषय–वस्तु का वर्णन अपने शब्दों में करते हैं ।

सहायक सामग्री– चित्र, पोस्टर, होर्डिंग, प्रोजेक्टर इत्यादि।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक द्वाारा बच्चों से वार्ता के क्रम में जानकारी ली जाएगी कि–

शिक्षक– किन–किन बच्चों के घर में रेडियो, टी0वी0, इण्टरनेट आदि की सुविधा है तथा इन माध्यमों का प्रयोग क्यों करते हैं?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)

शिक्षक– आपको टी0वी0 तथा रेडियो के अतिरिक्त और किन–किन संसाधनों का प्रयोग करना अच्छा लगता है और क्यों ?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)

शिक्षक यह भी जानने का प्रयास करेंगे कि बच्चों को अपने विषय से संबंधित जानकारी की आवश्यकता होने पर उसे कैसे प्राप्त करते हैं ?

बच्चों के संभावित उत्तर शिक्षक श्यामपट्ट पर लिखते जाएँगे।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक बच्चों को बताएँगे कि श्रव्य–दृश्य सामग्री, वह सामग्री होती है, जिसके माध्यम से हम विभिन्न प्रकार की सूचनाएं प्राप्त करते हैं। इतना ही नहीं बल्कि अपनी विषय–वस्तु से संबंधित जानकारियों को प्राप्त करने के लिए दीक्षा पोर्टल तथा रीड–एलांग जैसे ऐप का प्रयोग भी इंटरनेट द्वारा किया जाता है, जिससे हमें

कुछ भी समझने में सहायता मिलती है। कुछ चित्र तथा पोस्टर से संबंधित जानकारी बच्चों को शिक्षक द्वारा साझा की जाएगी तथा बच्चों के अनुभव को भी सुना जाएगा।

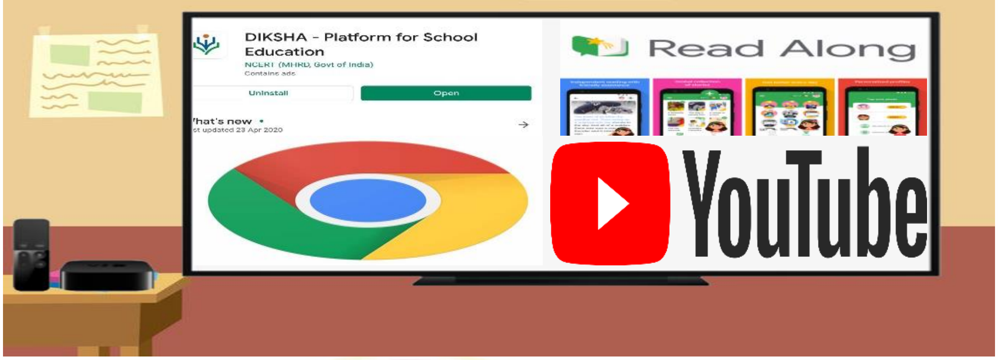

पोस्टर तथा होर्डिंग में दिए गए संदेशों को भी बच्चों को बताएँगे तथा इस प्रकार की सूचनाओं को अपने परिवेश से एकत्रित करके सुनाने को कहेंगे। साथ ही कार्यपत्रकों पर बच्चों से कार्य करवाएँगे । बच्चों को आपस में एक दूसरे के साथ अपने विचार साझा करने को भी कहेंगे।

आपस में चर्चा के बाद शिक्षक कार्यपत्रक संख्या 1 भरने को कहेंगे ।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक द्वारा कार्यपत्रकों की जाँच करने के बाद बच्चों को आवश्यक सूचनाओं को संग्रहित करने के लिए प्रेरित किया जाएगा और विभिन्न संचार माध्यमों द्वारा देखी या सुनी गई सामग्री को कक्षा में साझा करने को कहा जाएगा। इससे एक दूसरे को सीखने तथा समझने का अवसर मिलेगा तथा सूचनाओं पर ध्यान भी आकर्षित होगा। इसके बाद कार्यपत्रक संख्या दो को पूर्ण करवाया जाएगा। इसमें शिक्षक द्वारा बच्चों को अपेक्षित सहयोग किया जाएगा।

प्रदत्त कार्य– बच्चों को कार्यपत्रक संख्या तीन पर समाचार पत्रों में से खेल से संबंधित सूचनाएं लिखकर लाने को कहेंगे ।

सप्ताह– 8

दिवस–39

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे शब्द–युग्म की अवधारणा से परिचित हैं। वे इनका अर्थ जानते हुए भाषायी खेल एवं वाक्य–रचना में इनका प्रयोग करते हैं।

सहायक सामग्री– शब्द–युग्म का फ्लैश कार्ड, शब्द–युग्म की परिभाषा एवं उदाहरण लिखित चार्ट–पेपर आदि भौतिक संसाधन।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में–

शिक्षक कक्षा में श्यामपट्ट पर एक वाक्य लिखेंगे–

धीरे–धीरे बुनकर का **सुत–सूत** काट रहा था।

अब बच्चों से प्रश्न किया जाएगा कि इस वाक्य में एक जैसी आवाज वाले शब्द कितनी बार आये हैं। बच्चों के उत्तर को ध्यानपूर्वक सुनने के बाद कक्षा में निष्कर्षात्मक कथन किया जाएगा–

धीरे–धीरे एवं **सुत–सूत** इस प्रकार के शब्दों को शब्द–युग्म कहा जाता है किन्तु यहाँ पहला शब्द–युग्म **'धीरे–धीरे'** समानार्थक शब्द–युग्म है तथा दूसरा शब्द–युग्म **'सुत–सूत'** भिन्नार्थक शब्द–युग्म है। यहाँ 'सुत' का अर्थ पुत्र/बेटा है जबकि 'सूत' का अर्थ धागा है।

शिक्षण के मध्य

अब शिक्षक शब्द–युग्म की परिभाषा लिखा हुआ चार्ट पेपर कक्षा में प्रदर्शित करेंगे।

शब्द–युग्म– ध्वनि, उच्चारण एवं रचना की दृष्टि से साम्य रखने वाले एक तरह के दो शब्द शब्द–युग्म कहलाते हैं। ये दो प्रकार के होते हैं–

- **समानार्थक शब्द–युग्म** – जब एक ही शब्द एक साथ दो बार प्रयुक्त होकर वाक्य का आकर्षण बढ़ा देते हैं तो उसे समानार्थक शब्द–युग्म कहते हैं। जैसे गरम–गरम पकौड़ियाँ छन रही थीं।
- **भिन्नार्थक शब्द–युग्म** – भिन्नार्थक शब्द–युग्म दो शब्दों के ऐसे जोड़े को कहते हैं जो रचना तथा उच्चारण की दृष्टि से लगभग समान होते हैं किन्तु अर्थ की दृष्टि से उनमें पर्याप्त भिन्नता होती है, जैसे–अँगना–अंगना
- यहाँ अँगना का अर्थ आँगन/ घर का अन्तः भाग,
- अंगना का अर्थ स्त्री है।

इसके बाद शिक्षक कक्षा में शब्दयुग्मों के फ्लैश कार्ड बच्चों में वितरित करेंगे। **भवन–भुवन, जैसे–जैसे, ठंडे–ठंडे, अभिराम–अविराम, पूड़ी–पूरी ;** इन फ्लैश कार्डों को दिखाते हुए पर उन पर बारी–बारी से प्रश्न करेंगे। बच्चों के उत्तर देते समय शिक्षक सुगमकर्ता बनकर उनको सही उत्तर तक पहुँचाएँगे–

प्रश्न– भवन– भुवन कैसा शब्द–युग्म है ?

उत्तर– भिन्नार्थक शब्द–युग्म

प्रश्न– इनके अर्थ बताइये ।

उत्तर– भवन– घर / मकान
भुवन– विश्व /संसार

प्रश्न– समानार्थक शब्द–युग्म का उदाहरण बताइए।

उत्तर– जैसे–जैसे ।

प्रश्न– इसका अर्थ क्या है?

उत्तर– जिस प्रकार से ।

प्रश्न– 'ठंडे–ठंडे' कौन–सा शब्द–युग्म है, इसका अर्थ बताएँ।

उत्तर– समानार्थक शब्द–युग्म, अर्थ – शीतल।

इसी प्रकार अभिराम– सुन्दर, अविराम– लगातार, पूड़ी– व्यंजन विशेष, पूरी– सम्पूर्ण; इन शब्द–युग्म को भिन्नार्थक शब्द–युग्म बताकर इनके अर्थ बताए जाएँगे ।

शिक्षण के अंत में

- फ्लैश कार्ड में दिए गए शब्द–युग्म **कभी–कभी, डरी–डरी, गरम–गरम** पर चर्चा करेंगे।
- फ्लैश कार्ड में दिए गए भिन्नार्थक शब्द–युग्मों **सुत–सूत, नीर–नीड़ मन–मान, कुल–कूल, क्रम–कर्म** पर समझ विकसित की जाएगी।
- समानार्थक शब्द–युग्म, भिन्नार्थक शब्द–युग्म आदि पर चर्चा करते हुए इनके उदाहरण दिए जाएँगे। उन्हें बताया जाएगा कि जहाँ समानार्थक शब्द–युग्म के प्रयोग से वाक्य आकर्षक और रमणीय अर्थवाले हो जाते हैं वहीं भिन्नार्थक शब्द–युग्म को ठीक ढंग से प्रयोग न करने पर अर्थ का अनर्थ हो जाता है।

प्रदत्त कार्य– बच्चों को पाँच समानार्थक शब्द–युग्म तथा पाँच भिन्नार्थक शब्द–युग्म लिखकर लाने के लिए कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 8

दिवस–40

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे तद्‌भव–तत्सम शब्दों को जानते हैं तथा उनका प्रयोग करते हैं।
बच्चे तद्‌भव एवं तत्सम शब्दों के अर्थ एक दूसरे से पूछते हैं।

सहायक सामग्री– फ्लैश कार्ड, चित्र कार्ड आदि।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक बच्चों को कुछ चित्र कार्ड जैसे– आँख, आम, कान, कछुआ, आदि दिखाएँगे और बच्चों से पूछेंगे कि इस कार्ड में किनके चित्र हैं? बच्चे उसके तद्‌भव नाम ही लेंगे। अब उन्हें उसके तत्सम रूप बताएँगे। शिक्षक बच्चों को तद्‌भव एवं तत्सम की परिभाषा बताते हुए आगे शब्दों पर चर्चा करेंगे।

तत्सम– संस्कृत के वे शब्द जो हिन्दी में बिना किसी परिवर्तन के ग्रहण किए गए हैं तथा उनमें कोई ध्वनि परिवर्तन भी नहीं हुआ है, तत्सम शब्द कहे जाते हैं। जैसे– प्रकाश, ऋषि, पत्र,सूर्य, वायु।

तद्‌भव– ऐसे संस्कृत शब्द जो पालि, प्राकृत से विकृत होकर हिन्दी में आए हैं, तद्‌भव शब्द कहे जाते हैं। जैसे– आग, फूल, मोर।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक कक्षा के सभी बच्चों को 4 समूहों में बाँट देंगे और निम्न चार्ट के अनुसार बच्चे तत्सम, तद्‌भव, देशज और विदेशी शब्दों के 10–10 शब्द फ्लैश कार्ड को छाँटेंगे –

तत्सम	अश्रु	उलूक	कच्छप	ग्राम	गृह	चतुर्थ	तृण	नयन	भ्रमर
तद्भव	आँसू	उल्लू	कछुआ	गाँव	घर	चौथा	तिनका	नैन	भौंरा
देशज	पटकना	गगरी	लचक	खटिया	गोल	बकबक	लोटा	खिचड़ी	खिड़की
विदेशी	आलपीन	फीता	नर्स	डॉक्टर	पार्सल	रेलगाड़ी	सर्कस	लाइब्रेरी	प्लेट

एक समूह के बच्चों को बुलाकर सभी कार्ड में से तत्सम शब्दों को छाँटने को कहेंगे। दूसरे समूह के बच्चों को बुलाकर प्रथम समूह द्वारा छाँटे गए तत्सम शब्दों के तद्भव शब्द पूछे जाएँगे।शेष तीसरे और चौथे समूह के बच्चों को बुलाकर देशज और विदेशी शब्दों को छाँटने को कहेंगे।

गतिविधि– (बड़े समूह में)

- तत्सम एवं तद्भव शब्दों की पर्ची बनाएँगे ।
- बच्चों को एक गोल घेरे में खड़ा कर देंगे।
- एक संगीत की धुन पर बच्चों को गोल घेरे में घूमने को कहेंगे, जब ध्वनि रुके तब एक बच्चे द्वारा एक पर्ची उठाई जाएगी।
- बच्चे पर्ची पर लिखे गए शब्द का अर्थ समझते हुए यह बताएँगे कि वह तत्सम शब्द है या तद्भव शब्द। यदि बच्चा सही बता देता है तो पुनः संगीत की धुन बजेगी गतिविधि को आगे बढ़ाते रहना है।

शिक्षण के अंत में

दिए हुए कार्यपत्रक को बच्चों से करवाएँगे।

कार्यपत्रक संख्या एक और दो

प्रदत कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक संख्या तीन में दिए गए निर्देशों के अनुसार घर से पूरा करके लाने को कहेंगे।

सप्ताह– 9

दिवस–41

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे समास के अर्थ और भेद को जानते हैं। वे उनका प्रयोग अपनी बातचीत में करते हैं।

सहायक सामग्री– कार्यपत्रक, सामासिक शब्दों का फ्लैश कार्ड आदि।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक बच्चों से पूछेंगे कि 'राजा का पुरुष' जा रहा है तथा 'राजपुरुष' जा रहा है। इन दोनों में कौन सुनने में अधिक अच्छा लग रहा है?

बच्चों के उत्तर को सुनने के बाद स्पष्ट किया जाएगा कि राजपुरुष एक सामासिक पद है तथा राजा का पुरुष उसी का समास–विग्रह है। समास के प्रयोग से वाक्य सुन्दर लगने लगता है।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक बच्चों को समास की परिभाषा और भेद बताने के लिए लाए गए चार्ट पेपर को प्रस्तुत करेंगे ।

समास दो या दो से अधिक शब्दों का ऐसा सार्थक मेल है जिससे शब्द का अर्थ तो वही रहता है, किन्तु उसका सौन्दर्य बढ़ जाता है ।
जैसे– प्राण के समान प्रिय– प्राणप्रिय

समास के छह भेद हैं :–

- अव्ययीभाव समास
- तत्पुरुष समास

- कर्मधारय समास
- बहुव्रीहि समास
- द्विगु समास
- द्वंद्व समास

अब कक्षा में कार्यपत्रक संख्या एक पर कार्य और अभ्यास कराया जाएगा तथा अव्ययीभाव समास की परिभाषा दी जाएगी।

- **अव्ययीभाव समास**– जिस समास में पहला पद अव्यय होता है वह अव्ययीभाव समास कहलाता है।

विद्यालय के वार्षिकोत्सव के लिए सभी ने 'यथाशक्ति' धन जुटाया किन्तु बेहिसाब खर्च के कारण–पैसे की कमी हो गयी। प्रधानाध्यापक ने भरसक प्रयास किया कि बेमतलब के खर्च से बचा जाय। इस प्रकार उन्होंने सभी कार्यों पर प्रत्यक्ष निर्णय लिए और वार्षिकोत्सव सकुशल सम्पन्न हुआ।

नोट– उपरोक्त अनुच्छेद में से रेखांकित सामासिक पदों को अलग करें तथा समास–विग्रह करते हुए समास का नाम लिखिए–

समास	**समास–विग्रह**	**समास के नाम**
यथाशक्ति	शक्ति के अनुसार	अव्ययीभाव समास
बेहिसाब	....	....
भरसक	....	....
बेमतलब	....	....
प्रत्यक्ष	....	....
सकुशल	....	....

तत्पुरुष समास– जिस समास में बाद वाला पद प्रधान होता है तथा पहले पद की विभक्ति का लोप कर नया शब्द बनाया जाता है, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं।

उदाहरण–

समास	**समास विग्रह**
विद्यालय	विद्या का घर
रोगमुक्त	रोग से मुक्त

करकमल, देहलता तथा कृष्णसर्प लिखे हुए फ्लैश कार्ड दिखाएँगे तथा बताएँगे कि ये सभी समास हैं तथा इनके विग्रह और नाम इस प्रकार है–

शब्द	**समास विग्रह**	**समास का नाम**
करकमल	कमल के समान हाथ	कर्मधारय
देहलता	देहरूपी लता	कर्मधारय
कृष्णसर्प	काला सर्प	कर्मधारय

कर्मधारय समासः– जिस समास में पहला पद विशेषण तथा दूसरा पद विशेष्य होता है अथवा पहला पद उपमान और दूसरा पद उपमेय होता है वह कर्मधारय समास कहलाता है।

बहुब्रीहि समासः– जहाँ पहला और दूसरा पद मिलकर किसी तीसरे पद की ओर संकेत करते हैं वहाँ बहुबीहि समास होता है।

उदाहरण–

समास	**समास विग्रह**
पीतांबर	पीत है अंबर जिसका अर्थात् श्रीकृष्ण
दशानन	दस हैं आनन जिसके अर्थात् रावण।

द्विगु समासः– द्विगु समास में पहला पद संख्यावाचक विशेषण होता है।

उदाहरण–

समास	**समास विग्रह**
चारपाई	चार पायों का समूह
पंचमुखी	पाँच मुख वाला ।

द्वंद्व समास– जिस समास के दोनों पद प्रधान हों तथा दोनों पदों के बीच में 'और', 'तथा' या 'एवं' छिपा हो उसे द्वंद्व समास कहते हैं।

उदाहरण–

समास	**समास विग्रह**
अन्न–जल	अन्न और जल
पद–प्रतिष्ठा	पद और प्रतिष्ठा

शिक्षण के अंत में

शिक्षक कार्यपत्रक संख्या दो के माध्यम से समस्त पदों के आगे समास के नाम को लिखकर इनका अभ्यास कराएँगे। कक्षा में समास और उनके भेदों को पुनः बताते हुए अभ्यास कराया जायेगा। शिक्षक समासयुक्त शब्दों के समास–विग्रहों एवं समास के नाम श्यामपट्ट पर लिखेंगे तथा बच्चों से अभ्यास–पुस्तिका में अपनी देख–रेख में लिखने को कहेंगे।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक में दिए गए निर्देशों के अनुसार घर से पूरा करके लाने को कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के चार कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 9

दिवस–42

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे शब्दों के माध्यम से वाक्य–निर्माण व वाक्यों के प्रकार तथा उनके अन्तर को समझ पाते हैं।

सहायक सामग्री– फ्लैश कार्ड, चार्ट पेपर, आदि।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक कक्षा में कुछ वाक्य श्यामपट्ट पर लिखेंगे और बच्चों को ध्यानपूर्वक पढ़ने को कहेंगे, जैसे–

- पौधे खिला फूल में है।
- हमारा घर बहुत सुन्दर है।
- माँ बाजार गई और सब्जियाँ लेकर आई।
- जैसे ही शाम हुई बिजली चली गई।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक पौधे 'खिला फूल में है' इस उपर्युक्त वाक्य के माध्यम से बच्चों को बताएँगे कि इन शब्दों के क्रम से वाक्य का अर्थ स्पष्ट नहीं हो रहा है। ये शब्द–समूह तभी एक सार्थक वाक्य बनते हैं जब इन शब्दों को एक निश्चित और व्यवस्थित क्रम में रखा जाता है । शिक्षक बच्चों को सार्थक वाक्य से परिचित कराएँगे।

- पौधे में फूल खिला है।
- हमारा घर बहुत सुंदर है।

उपर्युक्त वाक्य के माध्यम से शिक्षक बच्चों को स्पष्ट करेंगे जिस वाक्य में एक मुख्य क्रिया, एक विधेय, और एक ही उद्देश्य होता है उसे सरल वाक्य कहते हैं। इस प्रकार सरल वाक्य की अवधारणा को स्पष्ट किया जाएगा।

- माँ बाजार गई और सब्जियाँ लेकर आई।

शिक्षक उपर्युक्त वाक्यों से बच्चों को स्पष्ट करेंगे कि जिन वाक्यों में दो या दो से अधिक स्वतन्त्र उपवाक्य किसी समुच्चयबोधक अव्यय से जुड़े होते हैं उन्हें "संयुक्त वाक्य " कहते हैं।

- जैसे ही शाम हुई बिजली चली गई।

उपर्युक्त वाक्यों के माध्यम से शिक्षक बच्चों को बताएँगे कि जिस वाक्य में एक मुख्य वाक्य हो और अन्य उपवाक्य उस पर आश्रित हो, उसे "मिश्र वाक्य" कहते हैं। मिश्र वाक्य के उपवाक्य कि, जैसा– जो, वह, जब–तब, क्योंकि आदि योजकों से जुड़े रहते हैं। अन्य उदाहरणों द्वारा वाक्य–रचना को स्पष्ट किया जाएगा।

उदाहरण–

- मनीष पुस्तक खरीदने बाजार गया। (सरल)
- कामिनी के हाथ से गिलास गिरा और टूट गया। (संयुक्त)
- जो धनी है वह सब कुछ खरीद सकता है। (मिश्रित)

शिक्षण के अंत में

शिक्षक अंत में श्यामपट्ट पर लिखे गए वाक्यों को बच्चों द्वारा सही पहचान कराते हुए कॉपी में लिखने को कहेंगे। अन्त में वाक्य–रचना और उनके प्रकार तथा अंतर पर प्रकाश डालते हुए सरल वाक्य से संयुक्त और मिश्रित वाक्य बनाने का निर्देश देंगे।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक में दिए गए निर्देशों के अनुसार घर से पूरा करके लाने को कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 9

दिवस–43

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– पठित सामग्री पर बेहतर समझ हेतु शब्दकोश या अन्य पुस्तकों से शब्द के अर्थ खोजते हैं और बताते हैं।

सहायक सामग्री– वाक्यांश और उसके लिए एक शब्द लिखा हुआ चार्ट, संबंधित फ्लैश कार्ड तथा अन्य भौतिक संसाधन ।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक कुछ वाक्य बोलते हुए श्यामपट्ट पर लिखते जाएँगे, जैसे–

- राजा हरिश्चन्द्र सत्यवादी राजा थे।
- भगत सिंह सच्चे देशभक्त थे।

इस तरह के वाक्य लिखते हुए उन्हें रेखांकित करते जाएँगे ।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक रेखांकित शब्द के अर्थ बच्चों से पूछेंगे। बच्चे बता भी सकते हैं तथा कुछ शब्दों पर रुक भी सकते हैं। शिक्षक रेखांकित शब्द का अर्थ बताते हुए बच्चों को समझाएँगे, **जैसे**–

- सदा सत्य बोलने वाला –सत्यवादी,
- देश के प्रति भक्ति रखने वाला –देशभक्त

जब अनेक शब्दों के स्थान पर एक शब्द का प्रयोग किया जाता है, उसे वाक्यांश के लिए एक शब्द कहते हैं।

इस तरह शिक्षक बच्चों को कुछ वाक्य दिखाकर समझाएँगे तथा कुछ वाक्य देंगे और उनके लिए एक शब्द लिखने को कहेंगे।

क्रम संख्या	वाक्यांश	एक शब्द
1	परोपकार को मानने वाला	कृतज्ञ
2	परोपकार को न मानने वाला	कृतघ्न
3	देश के प्रति निष्ठा रखने वाला	देशभक्त
4	दूसरों में दोष देखने वाला	छिद्रान्वेषी
5	अत्यधिक बढ़ा–चढ़ाकर कही गई बात	अतिशयोक्ति
6	आवश्यकता से अधिक वर्षा	अतिवृष्टि

शिक्षण के अंत में

शिक्षक कुछ वाक्य बोलकर उनके लिए एक शब्द बच्चों से पूछेंगे एवं उनकी कठिनाइयों का निवारण करते जाएँगे।

प्रदत्त कार्य–

- शिक्षक बच्चों को कुछ वाक्य देंगे तथा एक शब्द लिखकर लाने को कहेंगे–

वाक्य	एक शब्द
1– जो बाद में जन्मा हो	....
2– आगे आने वाला	....
3– जो अपने बात से न हटे	....
4– बहुत कम वर्षा होना	....

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 9

दिवस–44

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– विशिष्ट शब्दों, मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग लेखन में करते हैं।

सहायक सामग्री– मुहावरों और लोकोक्तियों से संबंधित कुछ पर्चियाँ, चार्ट पेपर।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक बच्चों को एक बड़े गोल घेरे मे बैठाएँगे और कहेंगे कि बच्चो! आज हम मुहावरों और लोकोक्तियों के बारे में जानेंगे और लेखन में मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग करना सीखेंगे।

"मुहावरा एक ऐसा वाक्यांश होता है जिसका अपना अर्थ होता है लेकिन आम प्रचलित भाषा में समझा नहीं जा सकता है।"

"लोकोक्ति एक प्रसिद्ध वाक्य होता है जिसका प्रयोग दूसरों को सलाह देने के लिए किया जाता है।"

शिक्षण के मध्य

शिक्षक बच्चों से सामान्य बातचीत करते हुए बच्चों को दो समूहों में बाँट देंगे। इसके बाद एक समूह को पहले से बनाई गई एक पर्ची देंगे जिसमें एक मुहावरा लिखा होगा। अब पहले समूह के एक बच्चे को पर्ची पढ़ने को कहेंगे तथा दूसरे बच्चे से उसी पर्ची के दूसरी तरफ उस मुहावरे का अर्थ लिखने को कहेंगे। तत्पश्चात दूसरे समूह के बच्चे पर्ची में लिखे मुहावरे और उसके अर्थ को पढ़कर उसका प्रयोग करते हुए वाक्य बनाएँगे और अपनी–अपनी कॉपी में लिखेंगे। यह

गतिविधि दोनों समूह के साथ पर्चियाँ अदल–बदल कर दुहराएँगे। जहाँ आवश्यकता होगी शिक्षक बच्चों की सहायता करेंगे।

पर्चियों में लिखे जाने वाले मुहावरे निम्नलिखित हो सकते हैं–

- दाँत खट्टे करना
- पेट में चूहे कूदना
- अवसर की राह देखना
- टस से मस न होना
- हृदय से लगाना

इसके बाद शिक्षक बच्चों से कार्यपत्रक संख्या एक व दो को पूर्ण करवाएँगे।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक श्यामपट्ट पर निम्नलिखित लोकोक्तियाँ लिखेंगे तथा बच्चों से उनके अर्थ एवं लोकोक्तियों का प्रयोग कर वाक्य बनाकर कॉपी में लिखने को कहेंगे–

- अंधी पीसे कुत्ता खाए
- अंधेर नगरी चौपट राजा
- नाच न आवे आँगन टेढ़ा
- बासी बचे न कुत्ता खाए

शिक्षक कक्षा में घूमकर अवलोकन करेंगे तथा बच्चों को होने वाली कठिनाइयों का समाधान करेंगे।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक संख्या तीन में दिए गए निर्देशों के अनुसार घर से पूरा करके लाने को कहेंगे।

सप्ताह– 9

दिवस–45

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे समाचार लेखन में समर्थ हो जाते हैं।

सहायक सामग्री– कार्यपत्रक, समाचार–पत्र, बाल–पत्रिका, अन्य पत्रिकाएं, चित्र, पोस्टर।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक बच्चों से समाचार–पत्र में छपी सूचनाओं पर चर्चा करेंगे। शिक्षक समाचार के शीर्षक को पढ़ने के लिए कहेंगे। सूचनाओं और शीर्षकों की विशेषताओं को बताएँगे । शिक्षक यह भी बताएँगे कि स्वयं को जागरूक एवं सचेत रखने के लिए सूचनाओं का आदान प्रदान करना अत्यंत आवश्यक है। इससे बच्चे मुद्रित सामग्री की विशेषताओं तथा आवश्यकताओं को समझ सकेंगे।

समाचारों के शीर्षक तथा उसके अन्तर्गत मुद्रित समग्री का विश्लेषण करके समझाएँगे।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक समाचार–पत्र में छपी सूचनाओं को पढ़कर बच्चों को सुनाएँगे तथा उसका शीर्षक बताने को कहेंगे। छपी हुई सूचना को सुनकर बच्चे अपने शब्दों में उसका सारांश बताएँगे।

इसी प्रकार बच्चों की स्मृति पर आधारित कोई भी एक सूचना सुनेंगे। उन्हें समाचार–पत्र पढ़ने के लिए प्रेरित करेंगे। बच्चों से बाल–पत्रिका हेतु सूचना एकत्रित करने को कहेंगे। इस कार्य में शिक्षक उनका सहयोग करेंगे। शिक्षक

बच्चों से कार्यपत्रकों पर कार्य भी करवाएँगे। संबंधित प्रश्नों के उत्तर लिखने को कहेंगे। शिक्षक स्वयं अन्य प्रश्न भी बच्चों से पूछ सकते हैं ।

शिक्षण के अंत में

दिए गए कार्यपत्रकों की जाँच करेंगे। बच्चों को प्रोत्साहित करेंगे। पुनः छात्रों को समाचार लेखन की प्रक्रिया समझाएँगे। बच्चों से बोध प्रश्न पूछने के उपरान्त बच्चों की जिज्ञासा का समाधान करेंगे ।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक में दिए गए निर्देशों के अनुसार घर से पूरा करके लाने को कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 10

दिवस–46

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे इंटरनेट से विविध विषयों की जानकारी प्राप्त करते हैं।

सहायक सामग्री– स्मार्टफोन, कंप्यूटर का चित्र।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में–

शिक्षक बच्चों से कक्षा के वातावरण को अनुकूल बनाने के लिए सामान्य प्रश्न करेंगे, जैसे–

शिक्षक– बच्चों आप लोग अपने यहां गणतंत्र दिवस के समारोह की तैयारी किस प्रकार से करते हैं?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)

शिक्षक– नृत्य या गायन सीखने के लिए आपको किसकी मदद लेनी पड़ती है?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)

शिक्षक– आपकी पुस्तक में जो क्यू आर कोड है, उसे हम किसके माध्यम से स्कैन करके पढ़ लेते हैं?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)

शिक्षक– इंटरनेट के प्रयोग से हम कौन–कौन से विषयों की जानकारी ले सकते हैं?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)

शिक्षण के मध्य

शिक्षक बच्चों को बताएँगे कि आज के परिवेश में इंटरनेट की उपयोगिता की बात करें तो चिकित्सा, शिक्षा, कृषि, मनोरंजन, खेल, सूचना एवं समाचार आदि समस्त

क्षेत्रों में इंटरनेट की मौजूदगी है या यूँ कहें कि हम बिना इंटरनेट के अधूरे हैं। इंटरनेट से हमें एक क्लिक करने पर संबंधित विषय की समस्त जानकारी प्राप्त हो जाती है, जो कि हमारे समय की बचत करती है और हमारे ज्ञान को बढ़ाती है। विगत वर्षों में जो कोरोना काल बीता है उसमें भी इंटरनेट के माध्यम से ही आप लोगों को पढ़ाया गया। अगर इंटरनेट नहीं होता तो यह संभव नहीं था। इसी प्रकार से दीक्षा एप, प्रेरणा पोर्टल, निपुण भारत आदि से संबंधित जानकारियां भी इंटरनेट के माध्यम से ही मिलती हैं। तत्पश्चात शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक संख्या एक व दो को पूर्ण करने के लिए कहेंगे।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक बच्चों को भारत के राष्ट्रीय प्रतीकों का चित्र अपने स्मार्टफोन में दिखाएँगे तथा बताएँगे कि यह इंटरनेट के माध्यम से ही संभव है कि हम घर बैठे ही सारी जानकारियां पलक झपकते ही प्राप्त कर लेते हैं।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक संख्या तीन में दिए गए निर्देशों के अनुसार घर से पूरा करके लाने को कहेंगे।

सप्ताह– 10

दिवस–47

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे इंटरनेट पर प्रकाशित सामग्री को पढ़ कर उसकी उपयोगिता के बारे में बताते हैं।

सहायक सामग्री– इंटरनेट पर प्रकाशित सामग्री, कार्यपत्रक।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक बच्चों से समाचार प्राप्त करने के माध्यमों के बारे में बातचीत करते हैं। शिक्षक बच्चों को यह भी बताते हैं कि वर्तमान समय में इंटरनेट अत्यन्त ही सशक्त माध्यम है जिसके द्वारा हम देश विदेश की जानकारी कुछ ही समय में प्राप्त कर सकते हैं।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक बच्चों को दीक्षा एप के माध्यम से कक्षा–7 की हिन्दी की पाठ्यपुस्तक की एक कविता को दिखाएँगे एवं सुनाएँगे–

कलम, आज उनकी जय बोल,
जला अस्थियाँ बारी–बारी
छिटकायी जिसने चिंगारी
जो चढ़ गए पुण्य–वेदी पर लिये बिना गरदन का मोल।
कलम, आज उनकी जय बोल।
जो अगणित लघु दीप हमारे
तूफानों में एक किनारे,
जल–जल कर बुझ गए किसी दिन माँगा नहीं स्नेह मुँह खोल।
कलम, आज उनकी जय बोल।

शिक्षक बच्चों को कविता सुनाने के पश्चात् बताएँगे कि हम इंटरनेट के माध्यम से किसी भी पाठ्यवस्तु, कविता, कहानी, समाचार—पत्र आदि के बारे में पढ़ एवं सुन सकते हैं।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक बच्चों को पुनः इंटरनेट की उपयोगिता के बारे में बताएँगे तथा कार्यपत्रक को पूर्ण करने के लिए कहेंगे। शिक्षक बच्चों की यथासंभव सहायता करेंगे।

प्रदत्त कार्य— शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक में दिए गए निर्देशों के अनुसार घर से पूरा करके लाने को कहेंगे।

(**नोट—** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 10

दिवस–48

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं को पढ़कर विषय–वस्तु पर विचार व्यक्त करते हुए अपने विद्यालय के लिए बाल पत्रिका का निर्माण करते हैं।

सहायक सामग्री– समाचार–पत्र, बाल कहानियाँ, नंदन, चंपक, चाचा चौधरी, कार्यपत्रक।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक बच्चों से मनोरंजन के विभिन्न साधनों के विषय में बातचीत करेंगे।

शिक्षक बच्चों से प्रश्न करेंगे कि–

- मनोरंजक साधनों में क्या–क्या आता है ?
- लिखित मनोरंजक साधनों से आप क्या समझते हैं ?
- आपको कौन सी पत्रिका सबसे अच्छी लगती है?
- उस पत्रिका में आपका सबसे अच्छा पात्र कौन है?
- पत्रिका में आपको सबसे अच्छा क्या लगता है?
- अगर आपको अपने विद्यालय के लिए बाल–पत्रिका का निर्माण करना हो तो किस प्रकार से करेंगे?

शिक्षण के मध्य

शिक्षक बच्चों को पत्रिका के विषय में बताएँगे। शिक्षक बच्चों को पत्रिकाओं की मूलभूत बातों को समझाते हुए बाल पत्रिकाओं के विषय में बताएँगे। शिक्षक बच्चों को यह भी बताएँगे कि बाल पत्रिकाओं का उद्देश्य मनोरंजन एवं शिक्षा देना आदि

है। कार्यपत्रक संख्या एक की सहायता से बाल–पत्रिका के अर्थ को समझाया जाएगा।

बाल पत्रिकाओं की विषयवस्तु क्या होनी चाहिए, इन पर परिचर्चा की जाएगी। इन पत्रिकाओं में कहानी, बालगीत, नैतिक कहानियों और हास्य कहानियों का समावेश होगा। शिक्षक कार्यपत्रक संख्या एक को पूरा करने में बच्चों की सहायता करेंगे।

शिक्षक बच्चों को दो समूहों मे विभक्त कर कार्यपत्रक संख्या दो को पूरा करने के लिए विचार विमर्श करने को कहेंगे । किस प्रकार से विद्यालय की पत्रिका आकर्षक हो, इसकी रूपरेखा कैसी हो, इसकी जानकारी प्राप्त करने में शिक्षक अपना योगदान देंगे ।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक बच्चों को बाल–पत्रिका के बारे में पुनः बताएँगे। कार्यपत्रक संख्या एक व कार्यपत्रक संख्या दो पर बच्चों से परिचर्चा करेंगे।

प्रदत्त कार्य– इन प्रश्नों को घर से लिखकर ले आएँ।

- विद्यालय की बाल–पत्रिका का शीर्षक कार्यपत्रक के अनुसार क्या होना चाहिए?
- बाल पत्रिका के मुख्य पृष्ठ में किन रंगों का प्रयोग होना चाहिए?
- मुख्य पृष्ठ पर क्या–क्या सूचनाएँ दी जानी चाहिए?

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 10

दिवस–49

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे कल्पना आधारित लेखन कार्य करते हैं।

सहायक सामग्री– विषय से संबंधित सामग्री ।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक एक काल्पनिक कहानी सुनाकर उस पर चर्चा करेंगे।

सुदूर पहाड़ी पर एक परी रहती थी, जिसके पास एक जादू की छड़ी थी। वह प्रतिदिन उड़ते हुए पहाड़ी के नीचे उस स्थान पर आती थी जहाँ बच्चे खेलते थे। उसे खेलते हुए बच्चों को देखना अच्छा लगता था। एक दिन जब वो नीचे आयी तो देखा कि सारे बच्चे उदास बैठे हैं, जब उसने कारण–पूछा तो बच्चों ने बताया कि उनकी गेंद खो गयी है। तब परी ने अपनी जादुई छड़ी घुमाई और एक गेंद बच्चों को दी। गेंद पाकर सभी बच्चे खुशी–खुशी खेलने लगे।

कहानी सुनाने के बाद इस पर चर्चा की जाएगी ।

चर्चा के बिंदु–

- परी प्रतिदिन पहाड़ी से नीचे क्यों आती थी ?
- यदि आप के पास जादुई छड़ी होती तो आप क्या–क्या करते ?

शिक्षण के मध्य

शिक्षक बच्चों को बताएँगे कि कल्पना आधारित लेखन किस प्रकार किया जाता है। इस लेखन में क्या–क्या सावधानियाँ बरतनी चाहिए। इसके बाद शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक संख्या एक में दिए गए विषय (यदि आप अपने गांव के प्रधान होते

तो आप कौन–कौन से कार्य करते?½ पर लिखने के लिए कहेंगे । शिक्षक बच्चों से ग्राम प्रधान के विभिन्न कार्यों के विषय में चर्चा करते हुए कार्यपत्रक को पूरा करने में मदद करेंगे।

बच्चों को अपने लिखित विचार प्रस्तुत करने का अवसर दिया जाएगा। इसके बाद शिक्षक द्वारा इस कार्यपत्रक पर अपने विचारों को प्रस्तुत करते हुए बच्चों को दूसरा कार्यपत्रक दिया जायेगा ।

कार्यपत्रक संख्या दो–

यदि आप प्रधानाध्यापक होते तो अपने विद्यालय में क्या–क्या बदलाव करते?

उपरोक्त विषय पर छोटे समूह (तीन–चार) में कार्य करने एवं सभी के विचारों को सम्मिलित करते हुए लिखने को प्रेरित करेंगे। कार्य पूर्ण होने के पश्चात् सभी समूहों को प्रस्तुतीकरण का अवसर प्रदान करेंगे।

शिक्षण के अंत में –

कार्यपत्रक संख्या दो पूर्ण होने के पश्चात शिक्षक द्वारा उस पर चर्चा का अवसर दिया जायेगा ।

बच्चो! इस प्रकार आज हम लोगों ने अपने मन की बात को अपने शब्दों में लिखना सीखा साथ ही महसूस किया कि कल्पना के दौरान हमारे मन में क्या–क्या चल रहा होता है।

प्रदत्त कार्य– अपने आस–पास के परिवेश से जुड़ी कोई कहानी घर से लिख कर लाएँ।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 10

दिवस–50

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे परियोजना (प्रोजेक्ट) कार्यों का प्रस्तुतीकरण करते हैं।

सहायक सामग्री– ऋतुओं से संबंधित पोस्टर।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक सर्वप्रथम बच्चों को कुछ चित्र दिखाएँगे जो ऋतुओं से संबंधित होंगे, जैसे– वर्षा ऋतु में बादल और बारिश का चित्र, ग्रीष्म ऋतु में पंखा झलता हुआ व्यक्ति, आइसक्रीम खाते हुए बच्चे, शरद ऋतु में अलाव तापते हुए गर्म कपड़ों में बैठे लोग।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक बच्चों को चित्र दिखाकर पूछेंगे कि वर्षा ऋतु में लोगों के समक्ष कौन–कौन सी समस्याएँ आती हैं ?

शिक्षक दो या तीन बच्चों को बोलने का अवसर देंगे।

इसी प्रकार ग्रीष्म तथा शरद ऋतु से संबंधित जानकारी बच्चों से साझा करें। इसके बाद बच्चों को ऋतुओं में आने वाले महीनों के नाम हिन्दी में बताएँ जो भारतीय पंचांग के अनुसार हो। इसे अंग्रेजी महीनों के नाम के अनुसार भी बताने का प्रयास करें। दिए गए चार्ट के अनुसार बच्चों को बताएँ कि मूलतः ऋतुएँ छह प्रकार की होती हैं। इन ऋतुओं में कौन–कौन से महीने आते हैं इनका परिचय कराएँ।

भारतीय पंचांग के अनुसार नीचे चित्र बनाना है। शिक्षक के सहयोग से बच्चे ध्यान पूर्वक देखेंगे ।

शिक्षक कैंची, दफ्ती तथा रंगीन पेपर की सहायता से बच्चों द्वारा एक क्राफ्ट बनावाएँ जिसमें ऋतुओं के नाम तथा महीनों के नाम हों, जैसे–

महीनों के नाम लिखें 12 की संख्या में	ऋतुओं के नाम लिखें

शिक्षण के अंत में

अब बच्चों को ऋतुओं तथा महीनों को आगे–पीछे तथा उनके सही क्रम में घुमाकर दिखा सकते हैं तथा बच्चों को स्वतन्त्र रूप से इसे स्वयं करके सीखने व जानने का अवसर प्रदान करें।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक में दिए गए निर्देशों के अनुसार घर से पूरा करके लाने को कहेंगे।

(**नोट**– बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

शिक्षा का अधिकार

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

राज्य हिन्दी संस्थान . उ.प्र. वाराणसी
उत्तिष्ठत जाग्रत

राज्य हिन्दी संस्थान, उत्तर प्रदेश, वाराणसी
(स्थापना वर्ष-1975)

निकट पुलिस लाइन, वाराणसी (पिनकोड-221001)

ई-मेल : rajyahindisansthan1975@gmail.com

वेबसाइट : rajyahindisansthanupvns.org.in